श्री चन्द्रप्रभ विधान

-: मंगल आशीर्वाद :-

समाधिस्थ परम पूज्य आचार्य 108
श्री विद्याभूषण सन्मति सागर जी महाराज
एवं
समाधिस्थ परम पूज्य सराकोद्धारक षष्टम पट्टाचार्य
108 श्री ज्ञान सागर जी मुनिराज

-: रचयित्री :-

परम विदुषी लेखिका, भारत गौरव,
गणिनी आर्यिका रत्न 105 श्री स्वस्ति भूषण माताजी

-: प्रकाशक :-

श्री स्वस्ति कल्याण समिति (रजि॰)

कृति : श्री चन्द्रप्रभ विधान
कृतिकार : गणिनी आर्यिका श्री 105 स्वस्ति भूषण माता जी
पंचम संस्करण : 2100 प्रतियाँ
प्रकाशन वर्ष : 2025
न्यौछावर राशि : 25.00 मात्र (साहित्य सृजन हेतु)

प्राप्ति स्थान :

1. **राकेश जैन, महामंत्री-श्री स्वस्ति कल्याण समिति (रजि)**
   दूरभाष : 9650946696
2. **उमेश जैन, मंत्री-श्री स्वस्ति कल्याण समिति (रजि)**
   दूरभाष : 7982630514
3. **श्री जैन साहित्य सदन, लाल मन्दिर, चाँदनी चौक, दिल्ली**
   दूरभाष : 09311168299, 011-23253638
4. **श्री सोनागिर सिद्ध तीर्थ क्षेत्र, दतिया (मध्य प्रदेश)**
   दूरभाष : 9425726867
5. **श्री 1008 मुनिसुव्रतनाथ दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र स्वस्तिधाम**
   शाहपुरा रोड़, जहाजपुर, जिला भीलवाड़ा, राजस्थान
   दूरभाष : 8824620107

Website - www.munisuvratswastidham.com
Instagram - munisuvrat_swastidham
Facebook - munisuvratswastidham
Youtube - swastidhamjahazpur

मुद्रक : दिपिशा एंटरप्राइज (दिल्ली) मो. 9210488047

प्रशांत मूर्ति आचार्य शांतिसागर प्रथम 'छाणी' और उनकी आचार्य परम्परा

बाल ब्रह्मचारी, प्रशान्तमूर्ति आचार्य 108 श्री शांतिसागर जी महाराज प्रथम 'छाणी' (उत्तर)

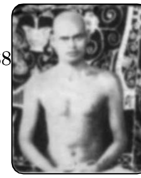

जन्म तिथि – कार्तिक वदी एकादशी, वि.सं. 1945 (31.10.1888)
जन्म स्थान – ग्राम - छाणी, जिला - उदयपुर (राजस्थान)
जन्म नाम – श्री केवलदास जैन
पिता का नाम – श्री भागचन्द जैन
माता का नाम – श्रीमति माणिक बाई जैन
क्षुल्लक दीक्षा – सन् 1922 (वि.सं. 1979), ग्राम गढ़ी, बाँसवाड़ा (राजस्थान)
मुनि दीक्षा – भाद्रपद शुक्ल चतुर्दशी वि.सं. 1980 (23.09.1923), सागवाड़ा जिला-डूंगरपुर (राज.)
आचार्य पद – सन् 1926 (वि.सं. 1983), गिरिडीह (झारखंड)
समाधिमरण – ज्येष्ठवदी दशमी (वि.सं. 2001) 17 मई, 1944, सागवाड़ा डूंगरपुर (राज.)

परम पूज्य प्रथम पट्टाचार्य 108 श्री सूर्यसागर जी महाराज

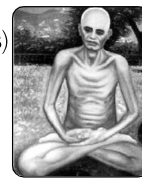

जन्म तिथि – कार्तिक शुक्ल नवमी, वि.सं. 1940 (09.11.1883)
जन्म स्थान – प्रेमसर, जिला - ग्वालियर (म.प्र.)
जन्म नाम – श्री हजारीमल पारेवाल जैन
पिता का नाम – श्री हीरालाल जैन
माता का नाम – श्रीमती गेदा बाई जैन
ऐलक दीक्षा – आसोज शुक्ल छठ वि.सं. 1981 (04.10.1924, इन्दौर (म. प्र.)
मुनि दीक्षा – मार्गशीर्ष वदी ग्यारस वि.सं. 1981 (23.11.1924), हॉटपिपल्या जिला-देवास (म.प्र.)
दीक्षा गुरु – आचार्य श्री शांतिसागर 'छाणी' महाराज से
आचार्य पद – कार्तिक शुक्ल दशमी वि.सं. 1985 (22.11.1928), कोडरमा (झारखंड)
समाधिमरण – श्रावण कृष्ण अष्टमी वि.सं. 2009 (14.07.1952), डालमिया नगर (झारखंड)

परम पूज्य द्वितीय पट्टाचार्य श्री 108 विजयसागर जी महाराज (वचन सिद्धि आचार्य)

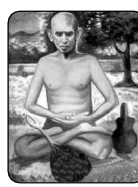

जन्म तिथि – माघ सुदी अष्टमी, वि.सं. 1938 (26.01.1882)
जन्म स्थान – सिरौली, जिला - ग्वालियर (मध्य प्रदेश)
जन्म नाम – श्री चोखेलाल जैन
पिता का नाम – श्री मानिक चन्द जैन
माता का नाम – श्रीमती लक्ष्मी बाई जैन
क्षुल्लक दीक्षा – इटावा (उत्तर प्रदेश)
ऐलक दीक्षा – मथुरा (उत्तर प्रदेश)
मुनि दीक्षा – वि.सं. 2000 (सन् 1943) मारोठ जिला-नागौर (राज.)
दीक्षा गुरु – प्रथमपट्टाचार्य श्री 108 सूर्यसागर जी महाराज
आचार्य पद – लश्कर, जिला-ग्वालियर (म.प्र.)
समाधिमरण – पौष वदी नवमी वि.स. 2019 (20.12.1962) मुरार, जिला-ग्वालियर (म.प्र.)

परम पूज्य तृतीय पट्टाचार्य श्री 108 विमल सागर जी महाराज (भिण्ड वाले)

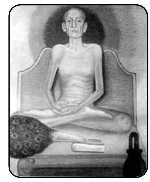

जन्म तिथि – पौष शुक्ल द्वितीया, वि.सं. 1948 (01.01.1892)
जन्म का नाम – श्री किशोरी लाल जैन
जन्म स्थान – ग्राम-मोहना, जिला-ग्वालियर (मध्य प्रदेश)
पिता का नाम – श्री भीकमचन्द जैन
माता का नाम – श्रीमति मथुरा देवी जैन
क्षुल्लक दीक्षा – वि.सं. 1997 (सन् 1941)
ऐलक दीक्षा – कापरेन नगर जिला कोटा (राज.)
मुनि दीक्षा – अगहन वदी पंचमी वि.सं. 2000 (17.11.1943) कोटा (राज.) में
दीक्षा गुरु – द्वितीय पट्टाचार्य श्री विजयसागर जी महाराज द्वारा पाटन, झालावाड़ (राज.)
आचार्य पद – वि.सं. 2030 (सन् 1973), हाड़ौती (राज.) में
समाधिमरण – बैशाख कृष्ण अष्टमी, वि.सं. 2030 (26.04.1973), दिन गुरुवार, सांगोद जिला कोटा (राज.)

मासोपवासी, समाधि सम्राट परम पूज्य चतुर्थ पट्टाचार्य 108 श्री सुमतिसागर जी महाराज

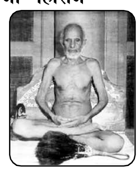

जन्म तिथि – आसोज शुक्ल चतुर्थी, वि.सं. 1974 (20.10.1917)
जन्म स्थान – ग्राम - श्यामपुर, जिला - मुरैना (मध्य प्रदेश)
जन्म नाम – श्री नत्थीलाल जैन
पिता का नाम – श्री छिद्दूलाल जैन
माता का नाम – श्रीमति चिरौंजी देवी जैन
ऐलक दीक्षा – चैत शुक्ल त्रियोदशी वि.सं. 2025 (11.04.1968), रिवाड़ी (हरियाणा) में
ऐलक नाम – श्री वीरसागर जी महाराज
दीक्षा गुरू – तृतीय पट्टाचार्य श्री 108 विमलसागर जी महाराज
मुनि दीक्षा – अगहन वदी द्वादशी वि.सं. 2025 (17.11.1968), गाजियाबाद (उ.प्र.)
आचार्य पद – ज्येष्ठ सुदी पंचमी वि.सं. 2030 (05.06.1973), मुरैना (म.प्र.) (तृतीय पट्टाचार्य श्री विमलसागर जी 'भिंड' महाराज से)
समाधिमरण – क्वार वदी त्रियोदशी वि.सं. 2051(03.10.1994), सोनागिरि जी सिद्धक्षेत्र जिला-दतिया (म.प्र.)

परम पूज्य पंचम सिंहरथ प्रवर्त्तक पट्टाचार्य श्री 108 विद्याभूषण सन्मति सागर जी महाराज

जन्म तिथि – अगहन वदी चतुर्थी, वि.सं. 2006 (10.11.1949)
जन्म स्थान – बरवाई, जिला - मुरैना (म.प्र.)
जन्म नाम – श्री सुरेश चन्द जैन
पिता का नाम – श्रीमंत सेठ श्री बाबूलाल जैन
माता का नाम – श्रीमती सरोज देवी जैन
क्षुल्लक दीक्षा – फाल्गुन शुक्ल तृतिया वि.सं. 2028 (17.02.1972) श्री सम्मेदशिखर जी (झारखंड)
मुनि दीक्षा – चैत्र सुदी त्रियोदशी वि.सं. 2045 (31.03.1988), सोनागिरी जी सिद्धक्षेत्र जिला-दतिया (म.प्र.)
दीक्षा गुरू – चतुर्थ पट्टाचार्य श्री सुमतिसागर जी महाराज
आचार्य पद – चैत्र सुदी पंचमी वि.सं. 2046, (10.04.1989) नरवर जिला- शिवपुरी (म.प्र.) पंचकल्याणक महोत्सव के उत्सव पर

परम पूज्य राष्ट्रसंत, सराकोद्धारक, वात्सल्यमूर्ति षष्टपट्टाचार्य श्री 108 ज्ञानसागर जी महाराज

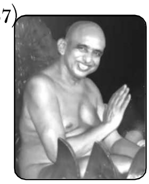

जन्म तिथि – वैशाख सुदी द्वितीया, वि.सं. 2014 (01.05.1957)

जन्म स्थान – मुरैना (मध्य प्रदेश)

जन्म नाम – श्री उमेश कुमार जैन

पिता का नाम – श्री शांतिलाल जैन

माता का नाम – श्रीमती अशर्फी देवी जैन

ब्रह्मचर्य व्रत – वि.सं. 2031 (सन् 1974)

क्षुल्लक दीक्षा – कार्तिक सुदी चतुर्दशी वि.सं. 2033 (05.11.1976) सोनागिरि सिद्धक्षेत्र में

क्षु. दीक्षा गुरू – चतुर्थ पट्टाचार्य श्री सुमति सागर जी महाराज

क्षु. दीक्षोपरान्त नाम – क्षुल्लक 105 श्री गुणसागर जी महाराज

मुनि दीक्षा – चैत्र सुदी त्रियोदशी वि.सं. 2045 (31.03.1988), सोनागिरि जी सिद्धक्षेत्र जिला-दतिया (म.प्र.)

मुनि दीक्षोपरान्त नाम – मुनि श्री 108 ज्ञानसागर जी महाराज

दीक्षा गुरू – चतुर्थ पट्टाचार्य श्रीसुमतिसागर जी महाराज

उपाध्याय पद – माघ वदी अष्टमी वि.सं. 2045 (30.01.1989), सरधना (मेरठ)

आचार्य एवं षष्ठपट्टाचार्य पद – ज्येष्ठ वदी तृतीया वि.सं. 2070 (27.05.2013) तीर्थ क्षेत्र बड़ागाँव जिला-बागपत (उ.प्र.)

समाधि – कार्तिक कृष्ण अमावस्या वि.सं. 2077, भगवान महावीर निर्वाण महोत्सव, 15.11.2020, दिन रविवार, बारां (राज.)

गणिनी आर्यिका रत्न श्री 105 स्वस्तिभूषण माता जी

जन्म तिथि – 1-11-1969 कार्तिक कृष्ण सप्तमी दिन, शनिवार (वि.सं. 2026)

जन्म स्थान – छिंदवाडा (मध्य प्रदेश) बचपन सिवनी

जन्म नाम – संगीता जैन (गुड़िया)

पिता का नाम – श्री मोती लाल जैन (निवासी सिवनी)
वर्तमान में (क्षु. श्री 105 परिणामसागर जी महाराज)

माता का नाम – श्रीमती पुष्पा देवी जैन
वर्तमान में (क्षु. श्री 105 अर्हत मती माताजी)

5 वर्ष ब्रह्मचर्य व्रत – परम पूज्य आचार्य श्री 108 पुष्पदंत सागर जी महाराज

2 वर्ष ब्रह्मचर्य व्रत – परम पूज्य संत शिरोमणि आचार्य श्री 108 विद्यासागर जी महाराज

लौकिक शिक्षा – एम. ए. (संस्कृत)

आजीवन ब्रह्मचर्य व्रत

दीक्षा गुरू – प्रशान्तमूर्ति आचार्य 108 श्री शान्ति सागर जी (छाणी) महाराज (उत्तर) के पंचम पट्टाचार्य सिंहरथ प्रवर्तक त्रिलोकतीर्थ प्रणेता आचार्य श्री 108 विद्याभूषण सन्मति सागर जी महाराज

दीक्षा तिथि व स्थान – 24 जनवरी 1996 माघ शुक्ल पंचमी, दिन बुधवार, (वि.सं. 2052) इटावा (उ.प्र.)

वर्तमान पट्टगुरु व गणिनी पद प्रदाता – परम पूज्य सराकोद्धारक तीर्थोद्धारक षष्ठम पट्टाचार्य श्री 108 ज्ञान सागर जी महाराज

तिथि एवं स्थान – 13 फरवरी 2020 फाल्गुन कृष्ण पंचमी, दिन बृहस्पतिवार (वि.सं. 2076), तीर्थ क्षेत्र स्वस्ति धाम, जहाजपुर (राजस्थान)

तेजोमयि व्यक्तित्व की धनी आर्यिकारत्न श्री स्वस्तिभूषण माताजी

-डॉ. श्रेयांस कुमार जैन, बड़ौत

(अध्यक्ष-अ.भा. शास्त्री परिषद्)

यों तो आर्यिकाओं और साध्वियों का बहुत बड़ा समुदाय भारत वसुंधरा पर जिनधर्म की प्रभावना कर रहा है। उनमें विलक्षण प्रज्ञा और प्रतिभा को धारण करने वाली आर्यिका माताओं का विशिष्ट स्थान है। उन्हीं प्रज्ञा और प्रतिभाशीला आर्यिकाओं में गणिनी आर्यिका श्री स्वस्तिभूषण माताजी का व्यक्तित्व प्रभावपूर्ण और आकर्षक है। इनके जीवन में सरलता, विद्वत्ता, श्रद्धा और विवेक का अनूठा संयोग है। वह मधुर भाषिणी, शांतचेता और सदा प्रसन्न रहने वाली आर्यिका हैं। सदा स्वाध्याय, ध्यान, चिंतन, मनन अध्ययन - अध्यापन में लीन रहती हैं। मैत्री, करुणा, प्रमोद, माध्यस्थ भाव आपके जीवन के कण - कण में समाए हुए हैं। यही कारण है कि आपके जीवन में कटुता और क्रोध कषाय आदि का अभाव है। आप प्रत्येक व्यक्ति में गुण अवलोकन करती हैं और नीरस जीवन में भी सरसता के सम दर्शन करती हैं। आपके पीयूषवर्णी प्रवचनों ने लोगों में आस्था के दीप प्रज्वलित किए हैं। समाज के व्यक्तियों में अंधविश्वास, अंधपरम्परा, रूढ़िवाद, जातिवाद, स्वार्थ, अंधता, ऊंच-नीच विषयक विषमता आदि दुर्गुणों को हटाने में आपकी अहम भूमिका है। नैतिक उत्थान के लिए आप अहर्निश प्रयत्न करती रहती हैं।

आपने दीक्षा धारण करने के बाद भी शिक्षा निरंतर ग्रहण की है, क्योंकि दीक्षा के साथ शिक्षा भी आवश्यक है। बिना शिक्षा के दीक्षा में कोई चमत्कृति पैदा नहीं होती है। ज्ञानाराधना से साधक जीवन में निखार आता है, जो आपश्री के जीवन में आया। ज्ञानाराधन करते हुए आपने शताधिक ग्रंथों का लेखन किया है। भक्ति साहित्य में तो नई चेतना ही लाई है। बहुत विधान और पूजाओं का लेखन कर लाखों लाखों व्यक्तियों को जिनेन्द्र भक्ति में जोड़ा है। समवशरण विधान, सर्वतोभद्र विधान, सिद्धचक्रविधान, कल्पद्रुम विधान आदि महाविधानों के माध्यम से समाज को भक्ति आयोजन करने-कराने की प्रेरणा दी है। वहीं एक दिवसीय विधानों के माध्यम से

भक्ति सरोवर में अवगाहन कराया है। आपकी लेखनी लोकप्रिय है। आप निरंतर सरल, सरस, सुबोध लेखन करती हैं। काव्य क्षेत्र में 'बड़ा ही महत्व है' इस काव्य के माध्यम से तो जन-जन को लुभाने का कार्य किया है। सभी लोगों में माताजी द्वारा बोला और लिखा जाने वाला 'बड़ा ही महत्व है' बड़ा ही प्रिय है। लेखन शैली जितनी प्रभावक है, उतनी ही प्रभावक आपकी प्रवचन शैली है। प्रवचन करते हुए जब आपकी वाणी रूपी सरिता कल-कल छल-छल कर प्रवाहित होती है तो श्रोता गण आनंद से झूम उठते हैं। आपके प्रवचनों में अंतःकरण से निकले हुए उद्‌गार बहुत ही स्फूर्त सहज और स्वाभाविक होते हैं।

आपके जीवन की अनेक विशेषताएं हैं। अलौकिक शिक्षा में विशेष सम्मान प्राप्त कर धार्मिक शिक्षा की गहराइयों में पहुंची, आध्यात्मिक क्षेत्र में बहुमान को प्राप्त किया। अपने गुरु सिंहरथ प्रवर्तक आचार्य श्री विद्याभूषण सन्मतिसागर महाराज की अनुकृति बनकर उन जैसे ही शताधिक रचनाएं कर गौरव बढ़ाया और लोकोत्तर रचना त्रिलोक तीर्थ के समान देवाधिदेव श्री 1008 मुनिसुव्रतनाथ तीर्थंकर की मनोहर चमत्कारी प्रतिमा को विराजित कर जहाजपुर में जहाजाकृति जैन मंदिर का निर्माण कराया जहाजपुर अतिशय क्षेत्र को त्रिलोक तीर्थ जैसी प्रसिद्धि प्राप्त कराने वाली आर्यिकाश्री स्वस्तिभूषण अपने आप में महान तेजोमयी व्यक्तित्व हैं। आपने अतिशय क्षेत्र पद्मपुरा में चौबीसी निर्माण, सिद्ध क्षेत्र सोनागिरि में सहस्रकूट जिनालय, झालरापाटन पाटन का जीर्णोद्धार, मुरैना में गुरुकुल, डोला जी अतिशय क्षेत्र का जीर्णोद्धार आपके निर्देशन में सम्पन्न हो रहा है एवं केशवराय पाटन प्राचीन तीर्थ का संपूर्ण नवीनीकरण भी आपके निर्देशन में हो रहा हैं।

इनके जीवन में सूर्य की तेजस्विता, चंद्रमा की शीतलता, सागर की गंभीरता, पृथ्वी की सहिष्णुता, कमल की निर्लिप्तता आकाश की शुभता है। जीवन में सद्‌गुणों का साम्राज्य है। आपकी आकृति में नम्रता है, प्रकृति में सहजता है और सेवा में निःस्वार्थता है। ज्ञान की गरिमा और आचार की मधुरिमा से आपका व्यक्तित्व जगमगा रहा है।

हमें गौरव है कि विद्वानों को सतत वात्सल्य प्रदान कर अखिल भारतवर्षीय दिगंबर जैन शास्त्री परिषद् को अधिवेशन, अनेक संगोष्ठियों की प्रेरणादात्री विभूति संयम साधना के क्षेत्र में अभिनंदनीय व्यक्तित्व की धनी स्वस्ति भूषण माता जी के चरणों में बारंबार वंदामि।

श्री चन्द्रप्रभ विधान

माँडला

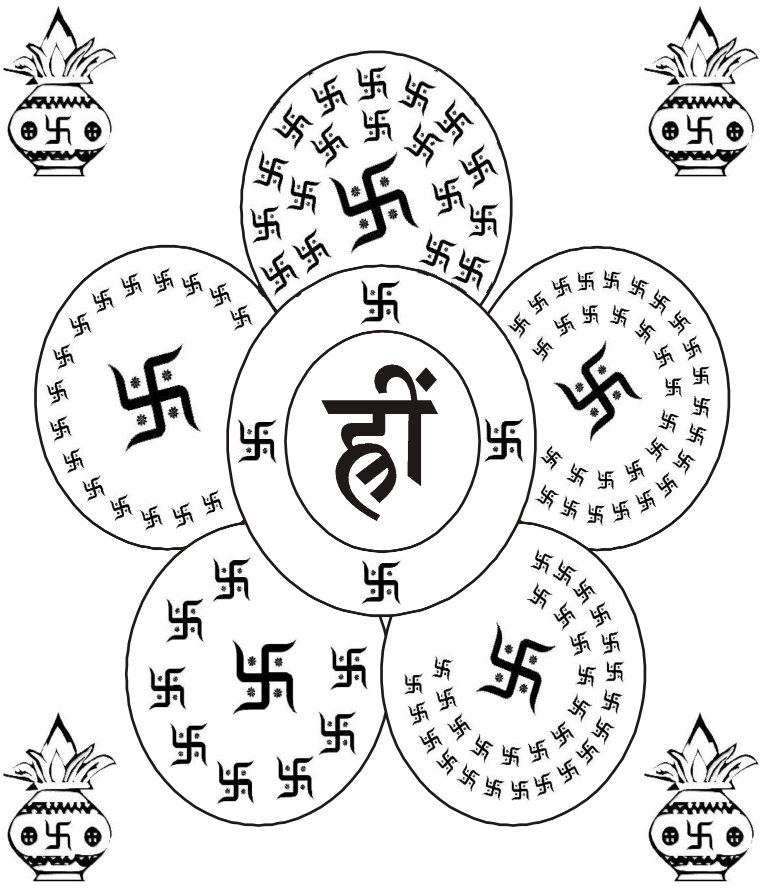

महा समुच्चय पूजन

चौपाई

अरिहंत सिद्धाचार्य नमन कर, पाठक साधु को शीश झुकाकर।
णमोकार को मन से जपता, सारे पाप शमन मैं करता।।
सामायिक नित आत्म को ध्याकर, पूजा का शुभ भाव बनाकर।
अष्ट द्रव्य मैं लेकर आया, तेरी पूजा कर हर्षाया।।
सहस्त्रनाम को पढ़ हर्षाऊँ, नित आगम का ध्यान मैं ध्याऊँ।
ऐसी शक्ति हृदय में देना, अपने चरणों में रख लेना।।

ॐ ह्रीं श्री अरिहंत, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय, सर्वसाधु, सरस्वती देवी, सोलहकारण भावना, दश धर्म, रत्नत्रय धर्म, त्रिलोक स्थित कृत्रिम-अकृत्रिम जिनबिम्बेभ्योः, पंचमेरु संबंधी जिनबिम्बेभ्योः, नंदीश्वर द्वीप संबंधी जिनबिम्बेभ्योः, कैलाश गिरि, सम्मेद शिखर, गिरिनार, चम्पापुरी आदि निर्वाण क्षेत्र, अतिशय क्षेत्र, चतुर्विंशति तीर्थंकर, गणधरादि मुनिश्वरेभ्यो अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहतो भव भव वषट् संन्निधिकरणं।

चाल छंद ''तुम सम्मेद शिखर को जइयो''

शुभ भावों का जल लाऊँ, पाँचों परमेष्ठी ध्याऊँ।
करूँ जन्म मरण का नाशा, हो देव शास्त्र गुरु वासा।।
तीसों चौबीसी ध्याकर, बीसों जिन शीश झुकाकर।
कृत्रिमाकृत्रिम को ध्याऊँ, पंचमेरू दर्श को जाऊँ।।
सब सिद्धों को नित ध्याऊँ, गणधर ऋषि दर्शन पाऊँ।
दर्शन नन्दीश्वर जाऊँ, सोलह कारण को भाऊँ।।
दश धर्म रत्नत्रय पाऊँ, नवदेवों को शुभ ध्याऊँ।
नमूँ ढाई द्वीप चौबीसी, अतिशय निर्वाण सभी की।।

ॐ ह्रीं समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चंदन वंदन को लाऊँ, पाँचों परमेष्ठी ध्याऊँ।
करूँ भवाताप का नाशा, हो देव शास्त्र गुरु वासा।।
तीसों चौबीसी ध्याकर, बीसों जिन शीश झुकाकर।
कृत्रिमाकृत्रिम को ध्याऊँ, पंचमेरू दर्श को जाऊँ।।
सब सिद्धों को नित ध्याऊँ, गणधर ऋषि दर्शन पाऊँ।
दर्शन नन्दीश्वर जाऊँ, सोलह कारण को भाऊँ।।

दश धर्म रत्नत्रय पाऊँ, नवदेवों को शुभ ध्याऊँ।
नमूँ ढाई द्वीप चौबीसी, अतिशय निर्वाण सभी की।।

ॐ ह्रीं समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो संसारताप विनाशनाय चंदनं नि. स्वाहा।

शुभ अक्षत धोकर लाऊँ, पाँचों परमेष्ठी ध्याऊँ।
करूँ क्षण क्षण कर्म का नाशा, हो देव शास्त्र गुरु वासा।।
तीसों चौबीसी ध्याकर.........

ॐ ह्रीं समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो अक्षयपद प्राप्तये अक्षतं नि. स्वाहा।

पुष्पों का हार सजाऊँ, पाँचों परमेष्ठी ध्याऊँ।
करूँ कामबाण का नाशा, हो देव शास्त्र गुरु वासा।।
तीसों चौबीसी ध्याकर.......

ॐ ह्रीं समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो कामबाण विनाशनाय पुष्पं नि. स्वाहा।

व्यंजन का थाल मैं लाऊँ, पाँचों परमेष्ठी ध्याऊँ।
करूँ क्षुधाव्याधि का नाशा, हो देव शास्त्र गुरु वासा।।
तीसों चौबीसी ध्याकर.......

ॐ ह्रीं समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं नि. स्वाहा।

शुभ दीपक लेकर आऊँ, पाँचों परमेष्ठी ध्याऊँ।
करूँ मोह अंध का नाशा, हो देव शास्त्र गुरु वासा।।
तीसों चौबीसी ध्याकर.......

ॐ ह्रीं समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो मोहांधकार विनाशनाय दीपं नि. स्वाहा।

वन्हि में धूप जराऊँ, पाँचों परमेष्ठी ध्याऊँ।
करूँ दुष्ट कर्म का नाशा, हो देव शास्त्र गुरु वासा।।
तीसों चौबीसी ध्याकर.......

ॐ ह्रीं समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो अष्टकर्म दहनाय धूपं नि. स्वाहा।

मैं सरस सभी फल लाऊँ, पाँचों परमेष्ठी ध्याऊँ।
करूँ अशुभ भाव का नाशा, हो देव शास्त्र गुरु वासा।।
तीसों चौबीसी ध्याकर....

ॐ ह्रीं समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो मोक्षफल प्राप्तये फलं नि. स्वाहा।

अर्घ्यों की माला लाऊँ, पाँचों परमेष्ठी ध्याऊँ।
करूँ चिन्ता द्वेष का नाशा, हो देव शास्त्र गुरु वासा।।
तीसों चौबीसी ध्याकर.........

ॐ ह्रीं समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ्यं नि. स्वाहा।

जयमाला

त्रिभंगी छंद

प्रभु ध्यान लगा के, भावना भा के, मंगलमय जीवन करता।
हो चरण में वंदन, जीवन चंदन, भक्ति से मैं भव तरता।।

शंभू छंद *(तर्जः भला किसी का...)*

अरिहंत सिद्ध आचार्य गुरू का, हम नित वंदन करते हैं।
उपाध्याय और सर्व साधु का, ध्यान हृदय में धरते हैं।।
देव हो सच्चा शास्त्र हो सच्चा, सच्चे गुरु को ध्याऊँगा।
भरत ऐरावत ढाई द्वीप, तीसों चौबीसी ध्याऊँगा।।1।।
विद्यमान श्री बीस तीर्थंकर, दर्शन की आशा करता।
होगा जब प्रत्यक्ष दर्श तो, हिय भी हर्ष तभी धरता।।
तीर्थंकर की वाणी ही, जिनवाणी जन कल्याण करे।
भव से पार करा दे उसको, जो इस पर श्रद्धान करे।।2।।
कृत्रिमाकृत्रिम तीन लोक के, जिन गृह को वंदन करता।
सिद्धालय के सिद्धों को ध्या, उन सम बनूँ आशा करता।।
पाँच मेरु के जिन बिम्बों को, करूँ मैं शत-शत बार नमन्।
नंदीश्वर के बावन जिन ध्या, पाप कर्म का करूँ शमन।।3।।
सोलह कारण भाव हैं सुन्दर, पद तीर्थंकर का देते।
दशलक्षण को धारण करके, मुक्ति सुन्दरी वर लेते।।
सम्यग्दर्शन ज्ञान चरित का, आराधन हम करते हैं।
हो जाये यदि एक बार तो, चतुर्गति को हरते हैं।।4।।
ऋषभ आदि श्री वीर जिनंदा, भावों से पूजन करता।
सच्ची श्रद्धा सच्ची भक्ति, से ही मानव सुख वरता।।
गौतम गणधर सप्त ऋषि, आदि का ध्यान लगाऊँगा।
विघ्नों का होगा विनाश, औ ऋद्धि सिद्धि को पाऊँगा।।5।।
राम हनु भरतेश बाहुबलि, के पुरुषारथ याद करूँ।
पंच बालयति तीर्थंकर ध्या, मुक्तिपुरी को शीघ्र वरूँ।।
समवशरण में मानस्तम्भ है, सहस्र कूट जिन को बंदूँ।
गर्भ जन्म तप ज्ञान मोक्ष पा, कल्याणक से अभिनंदूँ।।6।।

जिस भूमि को तीर्थकर ने, लेकर जन्म पवित्र किया।
तीर्थ अयोध्या श्रावस्ती, आदि को हमने नमन किया।।
रानीला में प्रगट हुये, श्री आदिनाथ वंदन करता।
चाँदखेड़ी के ऋषभनाथ का, ध्यान हृदय में नित धरता।।7।।
देहरे के चंदा, महावीर जी, सबकी विपदायें हरते।
श्री सम्मेदशिखर चंपापुर, औ सोनागिरि हृदय धरते।।
श्री नेमिनाथ जी मोक्ष गये, गिरनार गिरि को वंदन है।
आदिनाथ कैलाश गिरि से, मिट्टी बन गई चंदन है।।8।।
जितने मुनिवर सिद्ध हुए, निर्वाण भूमि को नमन करूँ।
कर्म नाश कर जग का दुख हर, मैं भी मुक्ति स्वयं वरूँ।।
शुभ भावों से की गई पूजा, शुभ फल को ही देती है।
भक्ति अर्चन पूजन वंदन, संकट सब हर लेती है।।9।।
मोह क्रोध तज पाप छोड़कर, निज का रूप निहारूँगा।
'स्वस्ति' जिन पूजन करके ही, प्रभु सम रूप सम्हारूँगा।।

दोहा

पूजन से प्रभु आपकी, रोम - रोम हर्षाये।
जिन पूजन का फल मिले, स्वर्ग मोक्ष को पाये॥

ॐ ह्रीं श्री अरिहंत, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय, सर्वसाधु, सरस्वती देवी, सोलहकारण भावना, दश धर्म, रत्नत्रय धर्म, त्रिलोक स्थित कृत्रिम-अकृत्रिम जिनबिम्बेभ्योः, पंचमेरु संबंधी जिनबिम्बेभ्योः, नंदीश्वर द्वीप संबंधी जिनबिम्बेभ्योः, कैलाश गिरि, सम्मेदशिखर, गिरिनार, चम्पापुरी, पावापुरी आदि निर्वाण क्षेत्र, अतिशय क्षेत्र, चतुर्विंशति तीर्थंकर, गणधरादि मुनिश्वरेभ्यो, जिनेन्द्रेभ्यो पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा

जिन शासन जिन देव औ, जिन गुरु शीश नवाय।
वीतराग का पद मिले, मुक्ति सुन्दरी पाय॥

॥ इत्याशीर्वादः परिपुष्पांजलिं क्षिपेत् ॥

श्री चन्द्रप्रभ विधान

त्रिभंगी छंद

अध्यात्म सिंधु, हम भक्त बिन्दु, सुख सागर बनने आये हैं।
दुख ने है घेरा, कष्ट घनेरा, उसे मिटाने आये हैं।।
तुम परम हंस, हम कर्म दंश, इस दंश से मुक्ति पाना है।
तुम सौख्य तरुवर, ज्ञान सरोवर, आकर हमें नहाना है।।

दोहा

शक्ति कम भक्ति अधिक, शब्द हुये हैं दूर।
चंद्र प्रभो भगवान जी, आशीष दो भरपूर।।

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आहननं। ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

त्रिभंगी छंद

मन कर्म से काला, पाप की हाला, पी आतम मदहोश हुआ।
चंदा सम उज्ज्वल, शांत धवल सम, प्रभु को लख शुभ ज्ञान हुआ।।
चंदा छवि प्यारी, हृदय में धारी, भक्ति का त्योहार मना।
जल चरण चढ़ाऊं, महिमा गाऊं आया है आनंद घना।।

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्व. स्वाहा।

यह आत्म निवेदन, है आवेदन, मन संतापित रहता है।
शीतल है चंदा, देव जिनंदा, भक्त ये मन से कहता है।।
चंदा छवि प्यारी, हृदय में धारी, भक्ति का त्योहार मना।
चंदन ले आया, चरण चढ़ाया, आया अब आनंद घना।।

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय संसार ताप विनाशनाय चंदनं निर्व. स्वाहा।

नश्वर जग माया, नश्वर काया, फिर भी पीछे भाग रहे।
चेतन यह जागे, मन शुभ लागे, अक्षय पद का ध्यान रहे।।
चंदा छवि प्यारी, हृदय में धारी, भक्ति का त्योहार मना।
अक्षत ले आया, चरण चढ़ाया, आया अब आनंद घना।।

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय संसार ताप विनाशनाय अक्षतं निर्व. स्वाहा।

हे काम विमोचन, रूप सुलोचन, आतम रूप सुहाया है।
फूलों पर भंवरे, जाकर संवरे, भंवरा भक्त ये आया है।।
चंदा छवि प्यारी, हृदय में धारी, भक्ति का त्योहार मना।
यह पुष्प ले आया, चरण चढ़ाया, आया है आनंद घना।।

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय काम बाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्व. स्वाहा।

मन है ये भूखा, पाप से सूखा, धर्म से तृप्त कराना है।
आसक्ति छूटे, कर्म ये टूटे, बस अब तुमको ध्याना है।।
चंदा छवि प्यारी, हृदय में धारी, भक्ति का त्योहार मना।
नैवेद्य ले आया, चरण चढ़ाया, आया है आनंद घना।।

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।

तूफान बीच में, कर्म कीच में, ज्ञान ज्योति बुझती जाये।
तुम ज्ञान के दाता, भाग्य विधाता, सच्चा पथ तुमसे पायें।।
चंदा छवि प्यारी, हृदय में धारी, भक्ति का त्योहार मना।
दीपक ले आया, चरण चढ़ाया, आया है आनंद घना।।

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्व. स्वाहा।

हम कर्म बुलाते, साथ बिठाते, फल पाने पर रोते हैं।
विनती से न जाये, तप से भगाये, बीज मुक्ति का बोते हैं।।
चंदा छवि प्यारी, हृदय में धारी, भक्ति का त्योहार मना।
मैं धूप ले आया, चरण चढ़ाया, आया है आनंद घना।।

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अष्ट कर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

भक्तों की भक्ति, है अभिव्यक्ति, मुक्ति फल पर ललचाया।
जग लौट न आऊँ, आतम ध्याऊँ, भाव आज मन में लाया।।
चंदा छवि प्यारी, हृदय में धारी, भक्ति का त्योहार मना।
मैं फल ले आया, चरण चढ़ाया, आया है आनंद घना।।

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय मोक्ष फल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

हो ज्ञान सूर्य तुम, चंद्र शांत सम, तुलना किससे की जाये।
उपमायें व्यर्थ हैं, ध्यान अर्थ है, भक्त तेरे गुण नित गाये।।
चंदा छवि प्यारी, हृदय में धारी, भक्ति का त्योहार मना।
ये अर्घ्य ले आया, चरण चढ़ाया, आया है आनंद घना।।

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचकल्याणक अर्घ्य

दोहा

मुक्ति पाने के लिये, हुये गर्भ में कैद।
कहीं रहें कुछ भी करें, है जड़ चेतन भेद।।

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्ण पंचमीदिवसे गर्भमंगल मंडिताय श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।

जनम लिया हर्षित हुये, बजी बधाई खूब।
पौष कृष्ण एकादशी, जय-जयकार की गूंज।।

ॐ ह्रीं पौषकृष्ण एकादश्यां जन्ममंगल मंडिताय श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।

नश्वर जग को जान के, क्षण में दिया है छोड़।
दीक्षा ले मुनि मौन हो, आत्म से नाता जोड़।।

ॐ ह्रीं पौषकृष्ण एकादश्यां तपोमंगल मंडिताय श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।

केवल ज्ञान की ज्योति ने, किया जगत परकाश।
समवशरण रचना हुई, भक्त को दर्श की आश।।

ॐ ह्रीं फाल्गुणकृष्ण सप्तम्यां ज्ञानमंगल मंडिताय श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।

कर्म से रिश्ता तोड़कर, पहुंच गये शिवधाम।
रिश्ता तुमसे जोड़कर, भक्त लेते हैं नाम।।

ॐ ह्रीं फाल्गुनशुक्ल सप्तम्यां मोक्षमंगल मंडिताय श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा

ध्येय बना और ध्यान कर, आतम ध्यान लगाय।
पुष्पांजलि कर पूजते, शत-शत शीश झुकाय।

।।मंडलोस्परि पुष्पांजलिं।।

प्रथम वलय

अनंत चतुष्टय अर्घ्यावली

चौपाई

तीन लोक इक बार में दिखता, पर नाही कुछ राग है रहता।
सबसे सुंदर आतम दर्शन, नाही राग द्वेष का घर्षण।।
नहीं कामना करूँ साधना, बस मेरी है यही भावना।
जड़ को तज चेतन को ध्याऊँ, प्रभु चरणों में शीश झुकाऊँ।।1।।

ॐ ह्रीं अनन्त दर्शन प्राप्ताय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

ज्ञान वही मुझको आ जाये, जिसमे आतम रूप दिखाये।
ऐसा ज्ञान प्रभु ने पाया, इसीलिये प्रभु शरण में आया।।2।।
नहीं कामना..............

ॐ ह्रीं अनन्त ज्ञान प्राप्ताय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

हर प्राणी को सुख की चाहत, सुख में ही मिलती है राहत।
मोह तजा सच्चा सुख पाओ, ऐसे प्रभु की शरण में आओ।।3।।
नहीं कामना..............

ॐ ह्रीं अनन्त सुख प्राप्ताय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देह दीवार को नित्य सजायें, कमजोरी बढ़ती ही जाये।
आत्म अनंत शक्ति के धारी, पाया जिनने धोक हमारी।।4।।
नहीं कामना..............

ॐ ह्रीं अनन्त वीर्य प्राप्ताय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

पूर्णार्घ्य

दोहा

अनंत चतुष्टय धार कर, आतम दर्श प्रमाण।
बोधि समाधि प्राप्त कर, इक दिन हो निर्वाण।।

ॐ ह्रीं प्रथम वलये अनंत चतुष्टय सहिताय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्वितीय वलय

अष्टप्रातिहार्य अर्घ्यावली

शंभू छंद

जब मोह भगा तब शोक ना है, आतम के ध्यान में लीन रहे।
वे तरु अशोक नीचे बैठे, जो सबके शोक को भगा रहे।।
प्रभु तेरे नाम को जपता रहूँ, बस मेरा ऐसा मन कर दो।
हे समवशरण में बैठे जिन, आतम में ज्ञान सुमन भर दो।।5।।

ॐ ह्रीं अर्ह श्री अशोक वृक्ष प्रातिहार्य गुण सहित श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

छाया की जिन्हें जरूरत ना, ये तीन छत्र सिर ऊपर हैं।
वैभव बतलाता ये सारा, मेरे प्रभु सबसे गुणधर हैं।।6।।
प्रभु तेरे.........

ॐ ह्रीं अर्ह श्री त्रिछत्र प्रातिहार्य गुण सहित श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वर्णिम सिंहासन लालायित, स्पर्श आपका पाने को।
चतु अंगुल ऊपर आप बसे, मुक्ति में शीघ्रहि जाने को।।7।।
प्रभु तेरे.........

ॐ ह्रीं अर्ह श्री सिंहासन प्रातिहार्य गुण सहित श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु आत्म ध्यान में लीन रहें, पर दिव्य ध्वनि उपदेश देय।
सबकी भाषा में परिणत हो, हर जीव समझ कर ज्ञान लेय।।8।।
प्रभु तेरे.........

ॐ ह्रीं अर्ह श्री दिव्य ध्वनि प्रातिहार्य गुण सहित श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सूरज चंदा और वृक्ष कभी, गुण गीत स्वयं न गाते हैं।
प्रभुवर तेरे गुण गाने को, दुदुंभि बाजे बज जाते हैं।।9।।
प्रभु तेरे.........

ॐ ह्रीं अर्ह श्री दुदुंभि प्रातिहार्य गुण सहित श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु के सानिंध्य को पाकर के, सारी सृष्टि थी हरषाई।
शुभ मंद-मंद भी पवन चले, फूलों की क्यारी लहराई।।10।।
प्रभु तेरे.........

ॐ ह्रीं अर्ह श्री पुष्पवृष्टि प्रातिहार्य गुण सहित श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु का भामंडल फैला जब, सूरज चंदा भी हार गया।
भक्तों ने आतम दर्श किया, सब कर्मों का भी भार गया।।
प्रभु तेरे नाम को जपता रहूँ, बस मेरा ऐसा मन कर दो।
हे समवशरण में बैठे जिन, आतम में ज्ञान सुमन भर दो।।11।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री भामंडल प्रातिहार्य गुण सहित श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चौंसठ चंवरो के द्वारा भी, देवो ने सेवा कीनी है।
वह भाग्य हमारा नहीं प्रभो, बस भक्ति ही कर लीनी है।।12।।
प्रभु तेरे.........

ॐ ह्रीं अर्ह श्री चौंसठ चंवर प्रातिहार्य गुण सहित श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य (दोहा)

प्रातिहार्य भी धन्य हुये, करके सेवा भाव।
मम भक्ति स्वीकार लो, पार लगाओ नाव।।

ॐ ह्रीं द्वितीय वलये अष्ट प्रातिहार्य सहित श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तृतीय वलय

षोडस कारण भावना गुण अर्घ्यावली

चाल छंद (तर्ज : ऐ मेरे वतन के...)

दर्शन को शुद्ध किया है, आतम का दर्श लिया है।
सच्चाई जग की जानी, जड़ की फिर बात न मानी।।13।।

ॐ ह्रीं दर्शन विशुद्धि भावना गुण युक्त श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अभिमान नहीं टिक पाया, झुक कर आतम को पाया।
था विनय महागुण धारा, तीर्थंकर बंध सम्हारा।।14।।

ॐ ह्रीं विनय सम्पन्न भावना गुण युक्त श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वे शील व्रतों को पालें, टूटे संकट के जाले।
यह शील भी मुझमें आये, बस यही भावना भाये।।15।।

ॐ ह्रीं शीलव्रतनिरतिचार भावना गुण युक्त श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ ज्ञान से ज्ञान बढ़ाया, जब आतम ध्यान लगाया।
हम ज्ञान जगत में लगाते, इससे ही दुःख उठाते।।16।।

ॐ ह्रीं अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोग भावना गुण युक्त श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जग दुष्कर्मों से डरते, न पाप की गागर भरते।
ऐसे हों भाव हमारे, प्रभु शरणा आये तिहारे।।17।।

ॐ ह्रीं संवेग भावना गुण युक्त श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

शक्ति से त्याग किया है, तब उत्तम त्याग लिया है।
हम त्याग की शक्ति पायें, फिर जग में ना भरमायें।।18।।

ॐ ह्रीं शक्तितस्त्याग भावना गुण युक्त श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तप बिन ये कर्म ना भागे, तप बिन आतम ना जागे।
तप ही आतम चमकावे, तपसी को शीश झुकावे।।19।।

ॐ ह्रीं शक्तितस्तपो भावना गुण युक्त श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

साधु समाधि करवाते, फिर स्वयं समाधि से जाते।
सब आधि व्याधि हट जावे, हम भी समाधि से जावें।।20।।

ॐ ह्रीं साधु समाधि भावना गुण युक्त श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वैय्यावृत्ति अपनाई, सेवा करते करवाई।
सेवा का फल बतलाया, तीर्थंकर पद को पाया।।21।।

ॐ ह्रीं वैय्यावृत्ति करण भावना गुण युक्त श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अरिहंत भक्ति को गाया, गुण गाकर मन हर्षाया।
शुभ भाव सुखद फल पाया, चरणों में अर्घ्य चढ़ाया।।22।।

ॐ ह्रीं अरहंत भक्ति भावना गुण युक्त श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुक्ति पथ के हैं गामी, और शिष्य बने अनुगामी।
आचार्य है करूणा सागर, आशीष की भरते गागर।।23।।

ॐ ह्रीं आचार्य भक्ति भावना गुण युक्त श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बहुश्रुत भक्ति करते हैं, अज्ञान दशा हरते हैं।
जिनवाणी गीत को गाऊँ, चरणों में अर्घ्य चढ़ाऊँ।।24।।

ॐ ह्रीं बहुश्रुत भक्ति भावना गुण युक्त श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वचनों को शुद्ध बनाया, प्रवचन भक्ति को गाया।
प्रवचन से ज्ञान को पाते, चरणों में शीश झुकाते।।25।।

ॐ ह्रीं प्रवचन करण भावना गुण युक्त श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आवश्यक निज करते हैं, इससे ही दुख हरते हैं।
मैं भी इसको नित पालूँ, फिर जनम दुबारा ना लूँ।।26।।

ॐ ह्रीं आवश्यकापरिहाणि भावना गुण युक्त श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

करना हैं धर्म प्रभावन, जिससे हर मन हो पावन।
हिंसा कषाय को त्यागूँ, बस मुक्ति के पथ लागूँ।।27।।

ॐ ह्रीं मार्ग प्रभावना भावना गुण युक्त श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वात्सल्य के हैं प्रभु सागर, सब को दें ज्ञान सुधाकर।
हम द्वेष ईर्ष्या त्यागें, वात्सल्य धार बरसावें।।28।।

ॐ ह्रीं प्रवचन वात्सल्य भावना गुण युक्त श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य

दोहा

सोलह भाव की भावना, तन मन शुद्ध बनायें।
चन्द्र प्रभू भगवान के, चरणन अर्घ्य चढ़ायें।।

ॐ ह्रीं तृतीय वलये षोडस कारण भावना सहित श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चतुर्थ वलय

18 महादोष रहित अर्घ्यावली

तर्ज - दरश विशुद्ध भावना भाय...

चारों गति में भूख सतायें, भूख मेटो हम पूजा गायें।
हो कल्याण, प्रभु जी मेरा, हो कल्याण।।
रत्नत्रय का बोध करादो, मुक्ति का रास्ता दिखलादो।
हो कल्याण, प्रभु जी मेरा, हो कल्याण।।29।।

ॐ ह्रीं क्षुधा महादोष रहित श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

पानी पीकर भी हूँ प्यासा, प्यास बुझे ये मुझको आशा।
बुझे ये प्यास, प्रभु जी मुझको, है यह आश।।30।।
रत्नत्रय का ....

ॐ ह्रीं तृष्णा महादोष रहित श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

भय ने तप से दूर किया है, इससे जग में कष्ट लिया
है। भगे डर दूर, अभय होऊ, तप हो भरपूर।।31।।
रत्नत्रय का ....

ॐ ह्रीं भय महादोष रहित श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

क्रोध बोध न होने देता, बदले में ना कुछ भी मिलता।
भगे यह क्रोध, हो जावे आतम का बोध।।32।।
रत्नत्रय का ....

ॐ ह्रीं क्रोध महादोष रहित श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

चिंता की घुन मुझको खाये, जीवन स्वस्थ होने न पाये।
चिंता हो दूर, चिंतन हो जाये भरपूर।।33।।
रत्नत्रय का ....

ॐ ह्रीं चिंता महादोष रहित श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जर-जर काया जब हो जाये, खुश्क बुढ़ापा खूब सताये।
जरा हो दूर, खिले धर्म का मन में फूल।।34।।
रत्नत्रय का ....

ॐ ह्रीं जरा महादोष रहित श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जिससे राग वही दुःख देय, अशुभ बंध फल अशुभ ही लेय।
हो वैराग्य, जग से मुझको हो वैराग्य।।
रत्नत्रय का बोध करादो, मुक्ति का रास्ता दिखलादो।
हो कल्याण, प्रभु जी मेरा, हो कल्याण।।35।।

ॐ ह्रीं राग महादोष रहित श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

मोह आत्म की याद भुलाये, बस बाहर में ही उलझाये।
होऊँ निर्मोह, जग से मैं होऊँ निर्मोह।।36।।
रत्नत्रय का ....

ॐ ह्रीं मोह महादोष रहित श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

औषध है फिर भी बीमार, है कर्मों का फल यह सार।
होंऊँ निरोग, भक्ति कर प्रभु होऊँ निरोग।।37।।
रत्नत्रय का ....

ॐ ह्रीं रोग महादोष रहित श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

मृत्यु का भय सदा सताये, तुम मृत्यु निर्वाण बनाये।
सदा सुख होय, मुक्ति में तो सदा सुख होय।।38।।
रत्नत्रय का ....

ॐ ह्रीं मृत्यु महादोष रहित श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

नहीं पसीना आपको आये, शुद्ध स्वच्छ तन आपहि पाये।
हम भी पायें, ऐसा ही तन हम भी पायें।।39।।
रत्नत्रय का ....

ॐ ह्रीं स्वेद महादोष रहित श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

नहीं खेद का जरा है काम, बस आतम में है विश्राम।
खेद न होय, हमको जरा सा खेद न होय।।40।।
रत्नत्रय का ....

ॐ ह्रीं विषाद महादोष रहित श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

मान ज्ञान को करता दूर, दोषो से मैं हूँ भरपूर।
ज्ञान हम पायें, मान तजा मार्दव आ जायें।।41।।
रत्नत्रय का ....

ॐ ह्रीं मद महादोष रहित श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

रति क्षति आतम में देय, इसीलिये हम जग दुख लेय।
प्रीत हो जाये, निज आतम बस मुझको भाये।।
रत्नत्रय का बोध करादो, मुक्ति का रास्ता दिखलादो।
हो कल्याण, प्रभु जी मेरा, हो कल्याण।।42।।

ॐ ह्रीं रति महादोष रहित श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जरा ना विस्मय तुमको होय, तीन लोक पल में अवलोय।
करूँ मैं ध्यान, हरपल तेरा करता ध्यान।।43।।
रत्नत्रय का ....

ॐ ह्रीं विस्मय महादोष रहित श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

होश गवां हम नींद में सोय, कांटे अपने मार्ग में बोय।
जाग हम जायें, जग की ओर से हम सो जायें।।44।।
रत्नत्रय का ....

ॐ ह्रीं निद्रा महादोष रहित श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

महाकष्ट हम जनम में पायें, सार्थक जनम नहीं कर पायें।
जन्म ना होय, प्रभू दुबारा जन्म न होय।।45।।
रत्नत्रय का ....

ॐ ह्रीं जन्म महादोष रहित श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

अरति वस्तु से हम करते, आप दोष हर सुख वरते।
अरति न होय, समता भाव हमारे होय।।46।।
रत्नत्रय का ....

ॐ ह्रीं अरति महादोष रहित श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

पूर्णार्घ्य

दोहा

दोषों की मैं खान हूँ, तुम दोषों से दूर।
दोष रहित मुझको करो, हो आनंद भरपूर।।

ॐ ह्रीं चतुर्थ वलये अष्टादश महादोष रहित श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचम वलय

बत्तीस गुण अर्घ्यालि

चाल छंद (तर्ज-ए मेरे वतन के...)

त्रिलोक ज्ञान में झलके, पर जरा न हिलती पलकें।
ऐसी शक्ति मैं पाऊँ, चरणों में शीश झुकाऊँ।।47।।
ॐ ह्रीं ज्ञान चक्षु प्राप्ताय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

नश्वर माया को छोड़ा, अक्षय धन नाता जोड़ा।
अक्षय धन का अभिलाषी, यह भक्त आत्मा प्यासी।।48।।
ॐ ह्रीं अक्षय धन प्राप्ताय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

मेरे हो भाग्य विधाता, साता के हो तुम दाता।
मेरा सौभाग्य है आया, तेरी पूजन को गाया।।49।।
ॐ ह्रीं सौभाग्य सुख प्राप्ताय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

विद्यायें शरण में आई, आश्रय पाकर हर्षाई।
कुछ विद्या हम भी पायें, तो आतम ध्यान लगायें।।50।।
ॐ ह्रीं सर्व विद्या प्राप्ताय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

प्रभु ने शाश्वत पद पाया, फिर जग ना मन को भाया।
शाश्वत पद हम भी पायें, चरणों में अर्घ्य चढ़ायें।।51।
ॐ ह्रीं शाश्वत पद प्राप्ताय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

हो ज्येष्ठ श्रेष्ठ जगनामी, आतम में अंतर्यामी।
मुझको भी श्रेष्ठ बनाओ, दर्शन देने प्रभु आओ।।52।।
ॐ ह्रीं ज्येष्ठ पद प्राप्ताय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

गुण की सुंदरता भायी, मूरत सुंदर दिखलाई।
मूरत को नित्य निहारूँ, यह जीवन तुम पर वारूँ।।53।।
ॐ ह्रीं आत्म लालित्य प्राप्ताय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

साधन इंद्रिय को बनाया, फिर इससे तप करवाया।
ध्वज आत्म विजय फहराया, चरणों में शीश झुकाया।।54।।
ॐ ह्रीं इंद्रिय विजय कराय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

तप में शक्ति को लगाया, कर्मो को शीघ्र भगाया।
करमों ने हमें सताया, इसलिये शरण में आया।।55।।
ॐ ह्रीं आत्म विजय कराय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

शुभचिंतक आप हमारे, हम शरणा आये तुम्हारे।
चिंता हर शांति पाऊँ, चरणों में अर्घ्य चढ़ाऊँ।।56।।

ॐ ह्रीं शुभचिंतक बंधुत्व प्राप्ताय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

सूरज चंदा है हारा, ऐसा है तेज तुम्हारा।
उस ज्योति से ज्योति जलाऊँ, आतम उजियारा पाऊँ।।57।।

ॐ ह्रीं आत्म ज्योति प्राप्ताय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

मोहित ना होय किसी से, बस आतम ध्यान खुशी से।
निर्मोही आतम ध्यानी, बाकी के सब अज्ञानी।।58।।

ॐ ह्रीं मोह तम विनाशनाय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

तुम्हें धर्म वृक्ष सम पाया, प्रभु छाया में हूँ आया।
जग माया मुझसे छूटे, कर्मों से रिश्ता टूटे।।59।।

ॐ ह्रीं धर्म छाया प्राप्ताय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जन्मों की कड़िया तोड़ी, दृष्टि जग से है मोड़ी।
मैं जन्म रहित हो जाऊँ, पूजा का यह फल पाऊँ।।60।।

ॐ ह्रीं पुनर्जन्म रहिताय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

क्षण भंगुर जग की कलियां, मुरझायें जग की गलियां।
नश्वर प्रभु नाम है तेरा, जो बने सहारा मेरा।।61।।

ॐ ह्रीं क्षणभंगुर जग रहिताय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

हो ध्येय ध्यान हो ध्याता, तीनो में भेद न पाता।
यह ध्यान मुझे हो जाये, आतम का रूप सुहाये।।62।।

ॐ ह्रीं ध्याता ध्येय ध्यान सुख प्राप्ताय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तप ने है पूज्य बनाया, तप ने आतम चमकाया।
तप करने भाव है जागा, इसलिये धर्म में लागा।।63।।

ॐ ह्रीं पूज्य पद प्राप्ताय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

पावन है रूप तुम्हारा, शुभ दिव्य हुआ उजियारा।
दर्शन कर भक्ति गाऊँ, श्रद्धा से शीश झुकाऊं।।64।।

ॐ ह्रीं दिव्य रूप प्राप्ताय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

अध्यात्म मयी है वाणी, कहलाती है जिनवाणी।
हित मित प्रिय वाणी पाऊँ, वचनों में ध्यान लगाऊँ।।65।।

ॐ ह्रीं पावन वाणी प्राप्ताय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

गीता छंद (प्रभु पतित पावन...)

शांति सुधाकर, ज्ञान आकर, चित्त शांति देती है।
शांति मयी मुद्रा तुम्हारी, खेद सब हर लेती है।।
मुक्ति प्रदायी, ज्ञान दायी, नाथ की पूजा करूँ।
सौभाग्य जागा आज मेरा, अशुभ कर्मों को हरूँ।।66।।

ॐ ह्रीं चित्त शांति प्राप्ताय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सन्मार्ग दिखलाते सभी को, वीतरागी हैं प्रभो।
सन्मार्ग बाधायें हरें, सबको सहायी हैं विभो।।67।।
मुक्ति प्रदायी..........

ॐ ह्रीं सन्मार्ग प्राप्ताय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

तीर्थ दर्शन बाद में, प्रत्यक्ष तीर्थंकर लखूँ।
वह शुभ समय कब आयेगा, जब दर्श स्वाद को मैं चखूँ।।68।।
मुक्ति प्रदायी..........

ॐ ह्रीं तीर्थंकर दर्श प्राप्ताय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

योगियो मुनियों से वंदित, सुर असुर से पूज्य हो।
ऐसे प्रभु की भक्ति पाऊँ, जन्म-जन्म ये धन्य हो।।69।।
मुक्ति प्रदायी..........

ॐ ह्रीं जन्म-जन्म प्रभु भक्ति प्राप्ताय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तप ध्यान की अग्नि में आतम, शुद्ध तुमने कर लिया।
सौभाग्य मुझको प्राप्त हो, मुक्ति में बस जाये जिया।।70।।
मुक्ति प्रदायी..........

ॐ ह्रीं शुद्ध आत्म द्रव्य प्राप्ताय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

कोमल हृदय ही जीव की, रक्षा सदा करता रहे।
मेरा हृदय कोमल बने, तब धर्म की धारा बहे।।71।।
मुक्ति प्रदायी..........

ॐ ह्रीं कोमल हृदय गुण प्राप्ताय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

संसार में आना औ जाना, बस यही करता रहूँ।
आवागमन और कर्म टूटे, वरना जग के दुख सहूँ।।

मुक्ति प्रदायी, ज्ञान दायी, नाथ की पूजा करूँ।
सौभाग्य जागा आज मेरा, अशुभ कर्मों को हरूँ।।72।।

ॐ ह्रीं जन्म मृत्यु रहित गुण प्राप्ताय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन देव ने जैसा कहा, वैसा हमें अब करना है।
सद् आचरण मेरा बने, सब अशुभ भाव को हरना है।।73।।

मुक्ति प्रदायी..........

ॐ ह्रीं जिन धर्म आचरण प्राप्ताय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लक्ष्मी पति लक्ष्मी का सुख, भक्तों को शीघ्र ही दीजिये।
संसार कष्ट को न सहूँ, अनुपम अचल सुख दीजिये।।74।।

मुक्ति प्रदायी..........

ॐ ह्रीं लक्ष्मी सुख प्राप्ताय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

बाधायें सुख में आती हैं, सुख-दुख तुरत बन जाता है।
बाधायें मेरी दूर होवें, भक्त भाव से भाता है।।75।।

मुक्ति प्रदायी..........

ॐ ह्रीं निराबाध सुख प्राप्ताय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

मन आत्म को स्थिर किया, भगवान प्रभु तुम बन गये।
स्थिर करो यह मन हमारा, जगत में हम सुखी भये।।

मुक्ति प्रदायी..........

ॐ ह्रीं मानसिक स्थिरता प्राप्ताय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हो न्याय शास्त्र के ज्ञानी प्रभु, अब न्याय मेरा कीजिये।
कर्मों ने हमको है सताया, न्याय मुझको दीजिये।।77।।

मुक्ति प्रदायी..........

ॐ ह्रीं जगत न्याय प्राप्ताय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जिनतीर्थ तीर्थंकर की पदवी, भी मुझे तो पाना है।
रस्ता वही दिखलाओ मुझको, पास प्रभु के जाना हैं।।
मुक्ति प्रदायी, ज्ञान दायी, नाथ की पूजा करूँ।
सौभाग्य जागा आज मेरा, अशुभ कर्मों को हरूँ।।78।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकर पद प्राप्ताय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

पूर्णार्घ्य (दोहा)

मंगल गाथा आपकी, गायें हम जिनदेव।
चन्द्र प्रभु भगवान जी, करूँ आपकी सेवा।।

ॐ ह्रीं पंचम वलये प्रभु गुण सहिताय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

षष्टम वलय

(प्रभु गुण अर्घ्यावलि)

शेर चला - दे दी हमें आजादी...

निर्भय निडर हो स्वामी मुझे, अभय कीजिये।
तप ध्यान धर्म करता रहूँ, अभय दीजिये।
मैं साधना के घाट तप का, दीप जलाऊँ।
बोधि समाधि प्राप्त हो, कर्मों को भगाऊँ।।79।।

ॐ ह्रीं भय रहित सुख प्राप्ताय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

क्षण-क्षण में शोक होता है, विशोक कीजिये।
आनंद वीणा सोई है, झंकार दीजिये।।80।
मैं साधना. . .

ॐ ह्रीं शोक विनाशनाय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आतम का रूप देख के, कुछ और न भाया।
संसार से वैराग्य हुआ, शरण को पाया।।81।।
मैं साधना. . .

ॐ ह्रीं वैराग्य भावना उद्भवाय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

ज्ञानी तुम्हें विद्वान कहें, ज्ञान दीजिये।
वाणी तुम्हारी शास्त्र बनी, ध्यान दीजिये।।82।।
मैं साधना. . .

ॐ ह्रीं शास्त्र मर्मज्ञता प्राप्ताय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

शांति का खजाना मिला, आतम के ध्यान से।
शांति का पथ है जग से अलग, शुद्ध ज्ञान से।।83।।
मैं साधना. . .

ॐ ह्रीं अपूर्व शांति प्राप्ताय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

अध्यात्म का अमृत पिया, विष कर्म हटाया।
अमृत मिले भक्तों को ध्यान, तेरा लगाया।।
मैं साधना के घाट तप का, दीप जलाऊँ।
बोधि समाधि प्राप्त हो, कर्मों को भगाऊँ।।84।।

ॐ ह्रीं अध्यात्म अमृत प्राप्ताय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निव. स्वाहा।

मंत्रो के द्वारा आपका हम, ध्यान लगाते।
हो कार्य सिद्ध पूर्ण मेरे, भावना भाते।।85।।

मैं साधना. . .

ॐ ह्रीं शुभ मंत्र सिद्धार्थाय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

कर्मों ने छोड़ा आपको, मृत्युंजयी हुये।
मृत्यु पे विजय मैं भी पाऊँ, चरण को छुये।।86।।

मैं साधना. . .

ॐ ह्रीं मृत्युंजयी पद प्राप्ताय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

सम्यक मेरा पुरुषार्थ सफल, आप ही करो।
बाधायें दूर करके नाथ, विपद को हरो।।
मैं साधना के घाट तप का, दीप जलाऊँ।
बोधि समाधि प्राप्त हो, कर्मों को भगाऊँ।।87।।

ॐ ह्रीं पुरुषार्थ सफलता प्राप्ताय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मों से रहित आत्मा, प्रसन्न ही रहें।
कैसे प्रसन्न हम रहें जो, कष्ट को सहे।।88।।

मैं साधना. . .

ॐ ह्रीं सदा प्रसन्नता प्राप्ताय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

शुभ गुण के हो भंडार, दान गुण का दीजिये।
गुणवान भक्त मैं बनूँ, ये कृपा कीजिये।।89।।

मैं साधना. . .

ॐ ह्रीं शुभ गुण प्राप्ताय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

ज्यों दीप से दीपक जले, प्रकाश हो गया।
पावन तुम्हारा नाम ले मैं, पावन हो गया।।90।।

मैं साधना. . .

ॐ ह्रीं पावन आत्मदर्शनाय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

संसार के कलह क्लेश, हमको सतायें।
मेरे भी क्लेश दूर हों, आशीष ये पायें।।
मैं साधना के घाट तप का, दीप जलाऊँ।
बोधि समाधि प्राप्त हो, कर्मों को भगाऊँ।।91।।

ॐ ह्रीं संसार द्वंद विनाशनाय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

अध्यात्म का अमृत पिया, औ भूख ना लगी।
आहार रहित स्वस्थ हों हम, आत्मा जगी।।92।।

मैं साधना. . .

ॐ ह्रीं निराहार स्वास्थ्य प्राप्ताय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

संसार की निधियां प्रभु, चरणों की दासी हैं।
हो मान रहित आप, जगत से उदासी है।।93।।

मैं साधना. . .

ॐ ह्रीं मान कषाय विनाशनाय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

कर्मों के हैं कलंक, आत्म काला कर दिया।
प्रभु भक्ति ने कलंक धो, उजाला कर दिया।।94।।

मैं साधना. . .

ॐ ह्रीं अपयश कलंक विनाशनाय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ कार्य में उपद्रवों की, सेना आती है।
प्रभु भक्ति गीत सुन के, वो तो भाग जाती है।।
भक्ति करें चंदाप्रभु की, चरण छांव में।
हे आत्मा तू आजा आज अपने गांव में।।95।।

ॐ ह्रीं कार्य उपद्रव विनाशनाय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

चिंतामणी हैं कामधेनु, नाम तुम्हारा।
मन वांछा मेरी पूरी करो, तेरा सहारा।।96।।

भक्ति करें . . .

ॐ ह्रीं मनवांछा पूर्ण कराय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

औषध की जगह नाम तेरा, रोग भगाये।
हम स्वस्थ हों, शुभ व्यस्त हों, औ शीश झुकायें।।97।।

भक्ति करें . . .

ॐ ह्रीं धर्म औषध प्राप्ताय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जिनदेव पूजा सेवा के, निमित्त प्राप्त हों।
औ तीर्थ वंदना करूं मैं, शांति प्राप्त हो।।98।।

भक्ति करें . . .

ॐ ह्रीं शुभ निमित्त प्राप्ताय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

सच्चे पिता तो आप हो, प्रभु रक्षा कीजिये।
संसार की उलझन से बचा, मुक्ति दीजिये।।
भक्ति करें चंदाप्रभु की, चरण छांव में।
हे आत्मा तू आजा आज अपने गांव में।।99।।

भक्ति करें . . .

ॐ ह्रीं प्रभु पितृ छाया प्राप्ताय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

हो ऋद्धि सिद्धि नाथ, ऋद्धि दाता हो तुम्ही।
देते दिखो न, देते हो, हो दाता वो तुम्ही।।100।।

भक्ति करें . . .

ॐ ह्रीं ऋद्धि सिद्धि प्राप्ताय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जो तेरा सच्चा भक्त है, यश उसका फैलता।
अपयश को करे दूर, सौख्य साथ खेलता।।
भक्ति करें चंदाप्रभु की, चरण छांव में।
हे आत्मा तू आजा आज अपने गांव में।।101।।

ॐ ह्रीं महायश प्राप्ताय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जिनदेव सरोवर में डुबकी जो भी लगाये।
आनंद महा प्राप्त हो दुख दूर भगाये।।102।।

भक्ति करें . . .

ॐ ह्रीं महा आनंद प्राप्ताय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

संसार में सब सौख्य पायें, भावना मेरी।
न द्वेष हो न ईर्ष्या, ये कामना मेरी।103।।

भक्ति करें . . .

ॐ ह्रीं सर्व जीव मैत्री कराय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

गुरुदेव मेरे आप हो, मैं शिष्य हूँ तेरा।
तेरी ही बात मानूँ मैं तो, भाव है मेरा।।104।।

भक्ति करें . . .

ॐ ह्रीं परम गुरु शरण प्राप्ताय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

है क्रोध महाशत्रु मेरा, शांत कीजिये।
समता का सुरक्षा कवच हो, ज्ञान दीजिये।।105।।

भक्ति करें . . .

ॐ ह्रीं महाक्रोध शत्रु नाशनाय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

संपूर्ण विश्व शांतिमय जीवन जिया करें।
कल्याण कारी मार्ग हो, उस पर चला करें।।
भक्ति करें चंदाप्रभु की, चरण छांव में।
हे आत्मा तू आजा आज अपने गांव में।।106।।

ॐ ह्रीं विश्व शांति कराय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

विशिष्ट योग्यता मिले, विशिष्ट कार्य हों।
हो धर्म की प्रभावना, औ आत्म ध्यान हो।।107।।

भक्ति करें . . .

ॐ ह्रीं विशिष्ट योग्यता प्राप्ताय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

भगवान की भक्ति से तृप्ति, मन में है होवे।
आतम भी होवे तृप्त, बीज कर्म का खोवे।।108।।

भक्ति करें . . .

ॐ ह्रीं जगत सुख तृप्ति कराय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

पूर्णार्घ्य (दोहा)

जिज्ञासु इस भक्त पर, धरो धर्म का हाथ।
भक्ति अर्पित मैं करूँ, मिले मुक्ति का पाथ।।

ॐ ह्रीं षष्ठम वलये श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप्य मंत्र

ॐ ह्रीं अर्हं श्री चन्द्र प्रभ जिनेन्द्राय नमः।

।।इति विधान संपूर्ण।।

जयमाला (दोहा)

भावों का ज्योति कलश, भक्ति भर कर लाय।
स्वीकारो चंदा प्रभो, शत-शत शीश झुकाय।।

(भुजंग प्रयात - नरेन्द्रं फणीन्द्रं)

चंदा प्रभु चंद्र, के जैसे चमके।
अंधेरा कहीं ना, वे सूरज से दमके।

महासेन महलों में, खुशियां है छाये।
सुलक्षण जी माता के, गर्भ समाये।।1।।
रतन वृष्टि करके, धरा धर्म कीना।
न दुख था कहीं भी, सभी सौख्य लीना।।
तभी स्वर्ग से देव, देवियां आई।
औ माता की सेवा की, बतियां बताई।।2।।
जनम का उजाला, चहुं दिश में आया।
सुमेरु पे अभिषेक, इंद्रो ने पाया।।
बचपन में जिनने भी, तुमको खिलाया।
बड़ा भाग्य शाली वो, मुक्ति को पाया।।3।।
वैराग्य दीपक, जला जब हृदय में।
तजी जग की वस्तु, लिया वास वन में।।
वे आतम से आतम, का ध्यान लगाते।
करम कालिमा धो, मन उजला बनाते।।4।।
चहुं घातियां घात, केवल उपाया।
बिना देखे दिखता, ये अतिशय है पाया।।
समवशरण रचना, कुबेर ने कीनी।
भक्तों ने भक्ति से, गुण मणियां लीनी।।5।।
प्रभो भक्त हम भी, शरण तेरी आये।
ये सुन लो कहानी, करम के सताये।।
नहीं ज्ञान सच्चा, नहीं आचरण है।
दो आशीष मुझको, हम तेरी शरण हैं।।6।।
कभी क्रोध माया, औ मान सताये।
कभी तृष्णा की अग्नि, मुझको जलाये।।
कभी द्वेष ईर्ष्या ने, डाका है डाला।
मेरे मन में मोह का, फैला है जाला।।7।।
कर्मों की मार, सही अब ना जाये।
मैं दर-दर में भटका, शरण तेरी आये।।
तुम्ही दीन बंधु, दयावान पालक।
मैं दुखिया जनम का, हूँ अज्ञानी बालक।।8।।
मैं अर्पण समर्पण से, वंदन हूँ करता।
ले सूरज और चंदा, से आरती करता।।
बुझे ज्ञान दीपक में, उजियारा आये।
जो चंदा प्रभु के, नित गुणगान गाये।।9।।

हरो पीर मेरी, औ संकट हटाओ।
मेरे मार्ग में आई, बाधा भगाओ।।
तेरा नाम जिसने, लिया उसको तारा।
जो भक्ति करे, संकटों से उबारा।।10।।
मेरी बार देरी क्यों, प्रभु जी लगाते।
मेरी भक्ति सच्ची, क्यों, मुझको रूलाते।।
नहीं नाथ अब मैं ना, गलती करूँगा।
तुम्हारे अनुसार, पथ पर चलूँगा।।11।।
हे आठों करम नाश, मुक्ति के वासी।
हमें युक्ति बतला, रखो न प्रवासी।।
रहे सांस तन में, भजन तेरे गाऊँ।
करें 'स्वस्ति' भक्ति, औ शीश झुकाऊँ।।12।।

दोहा

चंदा के सम चंद्र प्रभ, चमकें चारों ओर।
किरणें कुछ मुझको मिलें, हो जीवन की भोर।।

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्म विसर्जन के लिये, किया है यह शुभ पाठ।
मंगल जीवन हो मेरा, होवें सारे ठाठ।।

।।इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपेत्।।

प्रशस्ति

चौपाई

भक्ति का संकल्प निभाया, भक्ति में यह पाठ बनाया।
चंद्र प्रभो की भक्ति गाई, महिमा गरिमा है बतलाई।।
शाश्वत सुख के पालन हारे, शाश्वत सुख के देवन हारे।
शिखर समाधि जब चढ़ जाये, तब मुक्ति रस्ता खुल जाये।।
अंतिम लक्ष्य है मुक्ति पाना, फिर ना इस संसार में आना।
आनंद का झरना झर जाये, दुख का सागर शीघ्र सुखाये।।
प्रभु भक्ति के भाव हैं आये, मन मेरा लिखने को गाये।
आगरा शहर में कमला नगर है, उसमें महावीर मंदिर है।
वहां प्रारम्भ विधान किया था, पत्तल गली में पूर्ण किया था।।
दो दिन में विधान रचाया, 'स्वस्ति' ने प्रभु गुण को गाया।।

***

श्री चन्द्रप्रभ स्तोत्र

आ. स्वस्ति भूषण

1. जय चंद्र प्रभो जय चंद्र प्रभो, जयकारा भक्त लगाते हैं।
नन्हे-नन्हे कदमों से चल, बस द्वार तुम्हारे आते हैं।।
अभिलाषा जन्मों से जिनवर, नयना दर्शन के प्यासे हैं।
दर्शन देकर प्रभु तृप्त करो, गुण गान तेरा हम गाते हैं।।

2. फूलों में ज्यों खुशबू रहती, त्यों मेरे हृदय समा जाओ।
पत्थर में ज्यों सोना रहता, त्यों मेरा जीवन चमकाओ।।
साहस शक्ति और धैर्य नहीं, भक्ति वश चरणों आया हूँ।
तुम वीतराग तुम हो विराग, भावों का पुंज मैं लाया हूँ।।

3. सारी दुनिया में घूम चुका, हर ओर से जीवों को देखा।
हर जीव दुखी है परेशान, सब कर्मों का ही फल लेखा।।
नश्वर सुख की हम चाह लिये, संसार में कष्ट को सहते हैं।
जबसे देखा तुमको भगवन, तुमसा बनने को कहते हैं।।

4. आतम वैभव जब पाया तो, जग का जड़ वैभव छोड़ दिया।
ले धर्मचक्र नश कर्म चक्र, आतम से नाता जोड़ लिया।।
शुद्धातम में आनंद ऐसा, संसारी सुख ना भाया था।
निज ध्यान में जा गहरे पहुँचे, और मोह तजा निज काया का।।

5. वस्त्राभूषण गाड़ी घोड़ा, ना गृह परिवार है पास तेरे।
इनके बिन कैसे सुखी हुये, भर दो वह ज्ञान हृदय मेरे।।
वैराग्य तुम्हें कैसे आया, इस जग से नाता तोड़ लिया।
निज धर्म में कितना सुख पाया, जो इंद्रिय सुख को छोड़ दिया।।

6. आकाश में चंदा ज्यों निकले, फिर चांदनी अपनी बरसाये।
धरती पे सरोवर बीच रहे, झट सभी कुमुदनी खिल जाये।।
हे चंद्रप्रभो चंदा जैसे, किरपा की चांदनी बरसाओ।
धरती में रहते भव्यों का, हिरदय आ शीघ्र खिला जाओ।।

7. जब-जब तेरे दर्शन करते हैं, लगता है प्रथम बार देखा।
हर बार ही उतना आकर्षण, हर बार हृदय भरते देखा।।
दृष्टि जब तुम्हें निहारती है, ये पलक झपक ना पाती है।
अंतर गहराई से दर्श करूं, आँखें आँसू छलकाती है।।

8. आदेश नहीं प्रभू देते हैं, पर आज्ञा का है इंतजार।
त्रिलोक विजयी होकर प्रभुवर, निज से निज में करते विहार।।
बन सिद्ध प्रसिद्धि पाई है, निज गुणों से आप संवरते हो।
स्वर्गों का वैभव चरण पड़ा, अभिमान जरा ना करते हो।।

9. वह तीर्थ स्वयं बन जाता है, जहाँ पंच कल्याणक होते हैं।
इतने पवित्र हो चंद्रप्रभो, तुम नाम ले पाप को धोते हैं।।
चंदन शीतल चंदा शीतल, शीतल है गंगा नदी का जल।
ये तो तन को शीतल करते, चंदा प्रभु करें आतम शीतल।।

10. निःस्वार्थ हुये निष्काम हुये, फिर भी भक्तों के दुख हरते।
तुम सिद्ध शिला में बैठे हो, फिर भी भक्तों को सुख देते।।
तुम नाम की माला जपने से, कर्मों का जाला कटता है।
औषध के सम है नाम तेरा, तन व्याधि को भी हरता है।।

11. बिना क्रोध के कर्म शत्रु को, आपने कैसे भगा दिया।
बिना मान किये आत्म राज्य पर, शासन आपने कैसे किया।।
क्रोध मान दोनों है शत्रु, आतम का जो अहित करे।
वीतराग मुद्रा जिनवर की, दे संदेश भी सुहित करे।।

12. व्यंजन से भी ज्यादा सुख, तेरी भक्ति में मिलता है।
मन पुलकित-पुलकित हो जाता, सुख सुमन स्वयं ही खिलता है।।
हर श्वांस-श्वांस में तुम्हें जपूं, मेरे रोम-रोम में बस जाओ।
नयनों के पथ पर गमन करो, नयनाभिराम मन हर्षाओ।।

13. संसार की टेढ़ी गलियों में, मुक्ति का रास्ता भूल गये।
भटकाया मोह औ ममता ने, सुख-दुख का झूला झूल रहे।।
अक्षय सुख नगर निवासी तुम, रास्ता हमको भी बतलाओ।
तुम पिता मेरे, मैं पुत्र तेरा, मुझे हाथ पकड़ कर ले जाओ।।

14. तुम सदा चमकते चन्दा हो, कभी उदय अस्त ना होते हो।
ना रात कभी भी आती है, कभी ग्रहण ग्रसित ना होते हो।।
मम ज्ञान चन्द्र को हे जिनवर, कर्मों के मेघों ने ढाँका।
तेरी वरदानी दृष्टि पाऊँ, कर्मों का छुड़ा दूँ में छाँका।।

15. शास्त्रों में महिमा गाई है, पामर को पावन करते हो।
चरणों का जो स्पर्श करे, जीवन सावन कर देते हो।।
महिमा गरिमा को सुन करके, बड़ी दूर से भक्त ये आया है।
सम्यक्दर्शन सावन कर दो, यह आशा मन में लाया है।।

16. कोयल सी मीठी वाणी नहीं, और मोर सा नृत्य नहीं करता।
ना साहस भी है सिंह जैसा, ना घोर तपस्या मैं करता।।
मेंढक जैसी है भक्ति मेरी, भावों के बादल उमड़े हैं।
जैसा हूँ भक्त तुम्हारा हूँ, हम सुधरे हैं या बिगड़े हैं।।

17. वस्त्राभूषण की चाह लिये, जग समय को व्यर्थ गँवाता है।
तन की सुंदरता बढ़ जाये, ये लाख करोड़ कमाता है।।
तुमने जब आतम को देखा, इससे सुंदर ना कोई है।
वस्त्राभूषण तन राग तजा, मुक्ति सुख खेती बोई है।।

18. तुमसे मैं क्या मांगू भगवन, तुम तो मुक्ति फल दाता हो।
संसार के सुख साधन छोड़े, तुम तो प्रभु भाग्य विधाता हो।।
हे परम वीतरागी भगवन, भ्रांति नश शांति देते हो।
शुभ बुद्धि से शुभ भाग्य बने, मन की पीड़ा हर लेते हो।।

19. संसार तमस में जब डूबा, चंदा ने चाँदनी फैलाई।
तुम सदा चमकते चंदा हो, हम तारा गण सम हैं भाई।।
सोनागिर पर्वत के ऊपर, चंदा प्रभ का दरबार लगा।
भक्तों को शरणा में लेकर, कष्टों को देते शीघ्र भगा।।

20. इक बार नहीं दो बार नहीं, कई बार चंद्रप्रभ आये थे।
फिर धन कुबेर ने समवशरण, रचना करके हर्षाये थे।।
क्या अद्भुत श्य रहा होगा, मन सोच-सोच सुख पाता है।
ऐसी पावन भूमि पर आ, तन रोम-रोम खिल जाता है।।

21. अष्टम तीर्थंकर हे चंद्रप्रभ, आठों कर्मों को विनशाओ।
अष्टम भूमि है सिद्धशिला, हम भक्तों को वहाँ पे बुलवाओ।।
जब तक ना मुझको मुक्ति मिले, अपनी शरणा में ही रखना।
गुणगान तेरा हम करते रहे, नयनों में ज्योति बन दिखना।।

22. उजड़ा है चमन करते हैं नमन, मेरे बागवान प्रभु बन जाओ।
संघर्षमयी इस जीवन में, अध्यात्म ज्ञान को बरसाओ।।
गुण फूल खिले, शुभ ज्ञान मिले, जीवन उपवन हो वर्द्धमान।
ये नन्हें फूल से भक्तों का, स्वीकार करो जिनवर प्रणाम।।

23. चंदन तुमसे लेता सुगंध, और पुष्प भी खुशबू ले जाये।
चंदा ने चमक तुमसे पाई, शीतलता गंगा ले जाये।।
जग वैभव लौटाया जग को, आतम वैभव पा धनी बने।
अनुपम अनुगम उत्कृष्ट तुम्ही, अनुचर बनते है भक्त घने।।

शेर चाल (तर्ज-दे दी हमें आजादी....)

24. जय-जय करें चंदा प्रभु की, नमस्कार है।
जय जय करें सोनागिरी की, नमस्कार है।।
दर्शन से कोटि पाप कटे, नमस्कार है।
दर्शन से कोटि पुण्य बढ़े, नमस्कार है।

25. आराधना के गीत तुम्हें, नमस्कार है।
उपासना के मीत तुम्हें, नमस्कार है।।
हो आत्म साधना तो, साध्य तुम्हें बनाऊँ।
समकित की होवे प्राप्ति, हेतु तुमको मैं ध्याऊँ।।

26. आतम की शुद्धि हेतु तेरी, अर्चना करूँ।
भावों की शुद्धि हेतु तेरी, पूजा मैं करूँ।।
सत् पथ पे गमन हेतु नमन, चरणों में करूँ।
मुक्ति की प्राप्ति हेतु तेरी, वंदना करूँ ।।

27. श्री महासेन लाडले को, नमस्कार है।
माँ लक्ष्मणा के लाल तुम्हें, नमस्कार है।।
जन्म नगरी चंद्रपुरी, नमस्कार है।
सम्मेद शिखर मोक्ष गये, नमस्कार है।।

28. जिन ज्ञान किरण पाने, शरण तेरी आये हैं।
चंदा छवि चारु चमक, शुभ भाव भाये हैं।।
जिन भक्त हृदय वेदी में प्रभु, आप विराजे।
संसार के सब सौख्य उनके, द्वारे पे साजे।।

29. श्रद्धान अटल है मेरा, संताप हरोगे।
विश्वास प्रबल है मेरा, दुख दूर करोगे।।
मैं सच्चे हृदय से तेरी, भक्ति को करूंगा।
तुम नाम मंत्र नौका से, भव पार करूंगा।।

30. डाक्टर भी हार जाते, तेरे पास भेजते।
औ वैद्य भी निष्फल हुये, तेरे द्वार भेजते।।
तंत्र वादी मंत्र वादी, हार जाता है।
जो लेता शरण तेरी, वो ही पार पाता है।।

31. जो वायु तुम्हें छुये, औषधि दवा बने।
जो सच्ची भक्ति करता, रोग उसके है हने।।
एक नहीं दो नहीं, अतिशय अपार है।
सच्चे भगत का चरणों आ, बेड़ा पार है।।

32. स्वर्गों के इंद्र आपकी, सेवा में रहते है।
शुभ अर्चना औ वंदना के, गीत गाते हैं।।
मैं मंद बुद्धि आपके क्या, गीत बनाऊँ।
ताकत नहीं जिव्हा में, गीत कैसे मैं गाऊँ।।

33. तरु अशोक नीचे बैठ, ध्यान में हो लीन।
जो आता तेरी छांव में, दुख होता है विलीन।।
शोभायमान हो रहे, तुम ज्ञानी हो महान।
श्रद्धा से भक्त कर रहे, चरणों में नित प्रणाम।।

34. जंगल का राज्य सिंह ने, निज शक्ति से पाया।
सिंह समा मुक्ति राज्य, आपने पाया।।
धन कुबेर इससे ही, सिंहासन ले आया।
प्रभु त्रिलोकीनाथ को, उस पर है बिठाया।।

35. न गर्मी है ना जीव जन्तु, कोई सताये।
चौंसठ चॅवर इन्द्रों ने, आके फिर भी ढुराये।।
त्रिलोक का वैभव प्रभु के चरणों आ गया।
पर वीतरागी देव को, निज ध्यान भा गया।।

36. यशगान की, न कीर्ति की, ना चाह नाम की।
आतम में लीन ऐसे हैं, सुध नाही नाम की।।
देवों ने दुदुभि बजा, गुणगान किया है।
भक्तों ने आत्मा से ही, श्रद्धान किया है।।

37. जिनदेव के ऊपर तो है, त्रिछत्र की छाया।
ये तीन लोक नाथ है, उसने ही बताया।।
मोतियों की झालरों से, खूब सजता है।
छाया करें भक्तों पे, भक्त नाम भजता।।

38. चारों तरफ पुष्पों की, वृष्टि वहाँ होती है।
महकाती है तन मन को, भाव शुद्ध करती है।।
गंधोद बिन्दु मंद पवन, धीमे से चले।
जो आता प्रभु चरण, सौख्य उसको ही मिले।।

39. कोटि सूर्य कोटि चंद्र की, चमक फीकी।
चंदा प्रभू का तेज इतना, चमक है नीकी।।
नयनों में पावे शांति, जो भी दर्श करता है।
आँखों में ना हो रोग, आत्म हर्ष भरता है।।

40. तत्व, द्रव्य, आत्म धर्म, ज्ञान सिखाते।
ओंकारमयी वाणी, मोक्ष राह दिखाते।।
देव मनुज पशुओं ने आ, वाणी सुनी है।
हमको भी मिले सुनने प्रभु, तुमसे बनी है।।

दोहा

41. प्रभू चरण धरते जहां, स्वर्ण कमल बिछ जायें।
ऐसे चरण को पूज के, अपना भाग्य जगायें।।
महिमा गरिमा आपकी, हमसे वरणी न जाये।
शब्दों में नहि शक्ति है, कैसे प्रभु गुण गायें।।

शंभू छन्द (तर्ज-भला किसी का....)

42. कहा आपका मानूँगा मैं, तब ही तो सुख आयेगा।
यदि मानी ना बात आपकी, कर्म नरक ले जायेगा।।
नंत जन्म में अनंत दुख पा, दुःखों से घबराया हूँ।
वचनामृत दो चंद्रप्रभ जी, शरणा में मैं आया हूँ।।

43. रोग सताते हैं प्रभु मुझको, वैद्य आप ही बन जाओ।
धन बिन जग के दुख पाता हूँ, निर्धन को धन दिलवाओ।।
शत्रु करें अन्याय मेरे संग, न्याय मुझे प्रभु दिलवाओ।
करुणा सागर नाम तुम्हारा, करुणा का रस बरसाओ।।

44. चित्त में चेतन का चिंतन हो, अरिहंतों की शरण मिले।
मुक्ति प्रदायक पथ दर्शायक, जिनवाणी का ज्ञान मिले।।
वीतरागी गुरुओं की सेवा, रत्नत्रय उद्यान खिले।
प्रभु भक्ति का फल यह पाऊँ, अंत समय तेरी शरण मिले।।

45. अपनाओ या ठुकराओ, यह मैंने तुम पर छोड़ा है।
बहुतों को प्रभु पार किया, यह जान के नाता जोड़ा है।।
कमियों का पुतला हूँ मैं, कमियों को मेरी दूर करो।
संसार समुन्दर गहरा है, कर पकड़ मेरा भव पार करो।।

46. जीवन जीना ना आता है, जीवन जीना भी सिखलाओ।
भटका अटका हूँ मोही बन, मुक्ति पथ आपहि दिखलाओ।।
इस जनम यदि ना संभला तो, दोबारा ना फिर मौका है।
जग जंगल में खो जाऊँगा, तरने को ना फिर नौका है।।

47. सोनागिर की पावन माटी, माथे पर नित्य चढ़ाऊँगा।
सोनागिर की पावन भूमि, मैं माथा नित्य झुकाऊँगा।।
सोनागिर से जो सिद्ध हुये, मैं सिद्ध भक्ति को गाऊँगा।
सोनागिर से मैं सिद्ध बनूँ, बस यही भावना भाऊँगा।।

48. ना जाने कबसे खड़े हुये, चंदा प्रभ मूरत प्यारी है।
आकर्षित कर अतिशय करती, सारी दुनिया से न्यारी है।।
पर्वत के हर मंदिर में प्रभु, उन सबको वंदन करता हूँ।
'स्वस्ति' का नमन स्वीकार करो, कर्मो का क्रंदन हरता हूँ।।

श्री चन्द्रप्रभ चालीसा

दोहा

पंच गुरु को नमन कर, जिन आगम को ध्याय।
देव शास्त्र गुरु शरण में, आत्म शांति को पाय।।
चन्द्र प्रभ है चन्द्र सम, देते हैं वरदान।
सोनागिर के चन्द्र को, शत-शत करूँ प्रणाम।।

चौपाई

चन्द्र प्रभु की जय-जय होवे, धर्म बीज हृदय में बोवे।
चन्द्र चांदनी ज्यों बरसाता, अमृत भक्त प्रभु से पाता।।
भक्ति करने भक्त जो आते, छोड़ दुःखों को शांति पाते।
लक्ष्मणा मां ने खुश हो पाला, ममता की पहनाई माला।।
महासेन राजा के प्यारे, जन-जन की आंखो के तारे।
मति श्रुत अवधि ज्ञान के धारी, कर्म कालिमा तुमसे हारी।।
चन्द्रपुरी है नगर सुहाना, दुल्हन सम था उसका बाना।
इन्द्रदेव धरती पर आये, स्वर्गपुरी को साथ में लाये।।
ऐरावत हाथी भी आया, गिरि सुमेरु अभिषेक कराया।
नाचे इन्द्र भी झूम-झूम के, प्रभु के चरणा चूम-चूम के।।
भोजन वस्त्र स्वर्ग से आया, सेवा करके मन हर्षाया।
चन्दा सम बढ़े समय को बीते, शरद पूर्ण की कांति जीते।।
इक दिन दर्पण में मुख देखा, फिर वैराग्य का कारण लेखा।
नश्वर काया नश्वर माया, तुमने इनसे पिंड छुड़ाया।।
विमला नामक पालकी लाये, इन्द्र सहेतुक वन को जाये।
छोड़ दिये सब वस्त्राभूषण, दूर किया अज्ञान का दूषण।।
पंच महाव्रत समिति धारी, गुप्ति रक्षा करें तुम्हारी।
राग द्वेष संसार बढ़ाये, वीतरागता को तुम पाये।।
आत्मज्ञान पा धर्म सिखाया, तुमने केवलज्ञान जगाया।
तैयारी कर इन्द्र भी आया, समवशरण रचना करवाया।।
भव्यों का हुआ आना-जाना, ज्ञान प्राप्त कर मुक्ति पाना।
सोनागिर में किया था वासा, भक्त करें पूरी अभिलाषा।।
जहां-जहां प्रभु चरण पड़े थे, स्वर्ण कमल इन्द्रों ने रचे थे।
पत्थर का बन गया था सोना, पर्वत का हुआ रूप सलोना।।

जैन धर्म का किया प्रचारा, धर्म अहिंसा देकर नारा।
दुष्ट क्रोध को दूर भगाया, कर्मों ने न तुम्हें सताया।।
चमत्कार प्रभु ने दिखलाया, रोग शोक को दूर भगाया।
गूंगे को दे दी थी वाणी, पढ़े बैठकर वो जिनवाणी।।
लंगड़ा दौड़-दौड़ के चाले, अंधापन भी प्रभु जी टाले।
चंदा सम उजियाला पाया, मुक्ति का रस्ता दिखलाया।।
भक्ति से जो पूजा करते, निश्चित ही वे अतिशय वरते।
नंग-अनंग श्री महाराज, मुक्ति का पहना था ताज।।
साढ़े पांच कोड़ी मुनिराय, कर्म काट कर मुक्ति पाये।
सोनागिर दर्शन को जाऊँ, झुक-झुक चरणों शीश नवाऊँ।।
अतिशय पवित्र ये तीरथ जान, कण-कण इसका पावन मान।
ऊंचे-ऊंचे शिखर सुहाने, सुन्दर मंदिर दर्शन पाने।।
कर विहार सम्मेंद को आये, योग निरोध कर मुक्ति पाये।
मुक्तिपुरी में करते वासा, कर दो मेरी पूरी आशा।।
भक्तों के तुम बनो सहारा, दे दो प्रभु जी हमें किनारा।
'स्वस्ति' आकर शीश झुकाये, जग को तज मुक्ति को पाये।।

दोहा

चालीसा चालीस दिन, पाठ करें जो कोय।
सुख सम्पत्ति पावे अतुल, दुख दरिद्र सब खोय।।
चन्द्र प्रभु है चन्द्र सम, चन्द्रनाथ भगवान।
जीवन भर तुम भक्ति से, पाऊँ शिवपुर थाना।

''व्रत की विधि''

श्री चन्द्रप्रभ विधान व्रत, चन्द्रप्रभु की आराधना साधना और उन जैसे गुणों की प्राप्ति के लिये किये जाते हैं। इस विधान से मनवांछित फल स्वयं ही प्राप्त होते हैं। क्योंकि चन्द्रप्रभु भगवान स्वयं ही कल्पवृक्ष हैं। प्रभु के गुण अनंत है किन्तु 108 गुणों की स्तुति कर व्रत किये जायेंगे। एक गुण में अनंत गुण समाहित हैं। यदि इन्ही गुणों की साधना भाव से की जाये तो सच्चे सुख की प्राप्ति भी संभव है।

शक्ति के अनुसार एकासन उपवास आदि कर सकते हैं। इस व्रत का प्रारम्भ भगवान चन्द्रप्रभु के किसी भी कल्याणक की तिथि से प्रारम्भ करें और मोक्ष कल्याणक की तिथि या किसी शुभ दिन समापन करें। उद्यापन में श्री

चन्द्रप्रभु विधान करें एवं इच्छित वस्तु का दान करें। यह व्रत स्वयं करके दूसरे को करने की प्रेरणा दें। इस तरह 108 व्रत करके मनवांछित फल प्राप्त करें।

निम्नलिखित मंत्र जाप क्रम से व्रत के दिन करें:

1. ॐ ह्रीं अनन्त दर्शन प्राप्ताय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः
2. ॐ ह्रीं अनन्त ज्ञान प्राप्ताय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः
3. ॐ ह्रीं अनन्त सुख प्राप्ताय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः
4. ॐ ह्रीं अनन्त वीर्य प्राप्ताय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः
5. ॐ ह्रीं अर्ह श्री अशोक वृक्ष प्रातिहार्य गुण सहित चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः
6. ॐ ह्रीं अर्ह श्री त्रिछत्र प्रातिहार्य गुण सहित चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः
7. ॐ ह्रीं अर्ह श्री सिंहासन प्रातिहार्य गुण सहित चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः
8. ॐ ह्रीं अर्ह श्री दिव्य ध्वनि प्रातिहार्य गुण सहित चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः
9. ॐ ह्रीं अर्ह श्री दुंदुभि प्रातिहार्य गुण सहित चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः
10. ॐ ह्रीं अर्ह श्री पुष्प वृष्टि प्रातिहार्य गुण सहित चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः
11. ॐ ह्रीं अर्ह श्री भामंडल प्रातिहार्य गुण सहित चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः
12. ॐ ह्रीं अर्ह श्री चौंसठ चंवर प्रातिहार्य गुण सहित चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः
13. ॐ ह्रीं दर्शन विशुद्धि भावना गुण युक्त श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः
14. ॐ ह्रीं विनय सम्पन्न भावना गुण युक्त श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः
15. ॐ ह्रीं शीलव्रतनिरतिचार भावना गुण युक्त श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः
16. ॐ ह्रीं अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोग भावना गुण युक्त श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः
17. ॐ ह्रीं संवेग भावना गुण युक्त श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः
18. ॐ ह्रीं शक्ति तस्त्याग भावना गुण युक्त श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः
19. ॐ ह्रीं शक्तितस्तपो भावना गुण युक्त श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः
20. ॐ ह्रीं साधु समाधि भावना गुण युक्त श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः
21. ॐ ह्रीं वैय्यावृत्य करण भावना गुण युक्त श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः
22. ॐ ह्रीं अरहंत भक्ति भावना गुण युक्त श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः
23. ॐ ह्रीं आचार्य भक्ति भावना गुण युक्त श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः
24. ॐ ह्रीं बहुश्रुत भक्ति भावना गुण युक्त श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः
25. ॐ ह्रीं प्रवचन करण भावना गुण युक्त श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः

26. ॐ ह्रीं आवश्यकापरिहाणि भावना गुण युक्त श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः
27. ॐ ह्रीं मार्ग प्रभावना भावना गुण युक्त श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः
28. ॐ ह्रीं प्रवचन वात्सल्य भावना गुण युक्त श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः
29. ॐ ह्रीं क्षुधा महादोष रहित श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः
30. ॐ ह्रीं तृष्णा महादोष रहित श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः
31. ॐ ह्रीं भय महादोष रहित श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः
32. ॐ ह्रीं क्रोध महादोष रहित श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः
33. ॐ ह्रीं चिंता महादोष रहित श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः
34. ॐ ह्रीं जरा महादोष रहित श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः
35. ॐ ह्रीं राग महादोष रहित श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः
36. ॐ ह्रीं मोह महादोष रहित श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः
37. ॐ ह्रीं रोग महादोष रहित श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः
38. ॐ ह्रीं मृत्यु महादोष रहित श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः
39. ॐ ह्रीं स्वेद महादोष रहित श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः
40. ॐ ह्रीं विषाद महादोष रहित श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः
41. ॐ ह्रीं मद महादोष रहित श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः
42. ॐ ह्रीं रति महादोष रहित श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः
43. ॐ ह्रीं विस्मय महादोष रहित श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः
44. ॐ ह्रीं निद्रा महादोष रहित श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः
45. ॐ ह्रीं जन्म महादोष रहित श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः
46. ॐ ह्रीं अरति महादोष रहित श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः
47. ॐ ह्रीं ज्ञान चक्षु प्राप्ताय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः
48. ॐ ह्रीं अक्षय धन प्राप्ताय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः
49. ॐ ह्रीं सौभाग्य सुख प्राप्ताय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः
50. ॐ ह्रीं सर्व विद्या प्राप्ताय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः
51. ॐ ह्रीं शाश्वत पद प्राप्ताय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः
52. ॐ ह्रीं ज्येष्ठ पद प्राप्ताय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः
53. ॐ ह्रीं आत्म लालित्य प्राप्ताय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः
54. ॐ ह्रीं इंद्रिय विजय कराय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः

55. ॐ ह्रीं आत्म विजय कराय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः
56. ॐ ह्रीं शुभचिंतक बंधुत्व प्राप्ताय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः
57. ॐ ह्रीं आत्म ज्योति प्राप्ताय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः
58. ॐ ह्रीं मोह तम विनाशनाय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः
59. ॐ ह्रीं धर्म छाया प्राप्ताय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः
60. ॐ ह्रीं पुनर्जन्म रहिताय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः
61. ॐ ह्रीं क्षणभंगुर जग रहिताय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः
62. ॐ ह्रीं ध्याता ध्येय ध्यान सुख प्राप्ताय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः
63. ॐ ह्रीं पूज्य पद प्राप्ताय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः
64. ॐ ह्रीं दिव्य रूप प्राप्ताय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः
65. ॐ ह्रीं पावन वाणी प्राप्ताय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः
66. ॐ ह्रीं मन चित्त शांति प्राप्ताय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः
67. ॐ ह्रीं सन्मार्ग प्राप्ताय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः
68. ॐ ह्रीं तीर्थंकर दर्श प्राप्ताय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः
69. ॐ ह्रीं जन्म-जन्म प्रभु भक्ति प्राप्ताय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः
70. ॐ ह्रीं शुद्ध आत्म द्रव्य प्राप्ताय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः
71. ॐ ह्रीं कोमल हृदय प्राप्ताय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः
72. ॐ ह्रीं जन्म मृत्यु रहित गुण प्राप्ताय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः
73. ॐ ह्रीं जिन धर्म आचरण प्राप्ताय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः
74. ॐ ह्रीं लक्ष्मी सुख प्राप्ताय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः
75. ॐ ह्रीं निराबाध सुख प्राप्ताय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः
76. ॐ ह्रीं मानसिक स्थिरता प्राप्ताय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः
77. ॐ ह्रीं जगत न्याय प्राप्ताय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः
78. ॐ ह्रीं तीर्थंकर पद प्राप्ताय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः
79. ॐ ह्रीं भय रहित सुख प्राप्ताय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः
80. ॐ ह्रीं शोक विनाशनाय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः
81. ॐ ह्रीं वैराग्य भावना उद्भवाय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः
82. ॐ ह्रीं शास्त्र मर्मज्ञता प्राप्ताय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः
83. ॐ ह्रीं अपूर्व शांति प्राप्ताय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः

84. ॐ ह्रीं अध्यात्म अमृत प्राप्ताय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः
85. ॐ ह्रीं शुभ मंत्र सिद्धार्थाय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः
86. ॐ ह्रीं मृत्युंजयी पद प्राप्ताय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः
87. ॐ ह्रीं पुरुषार्थ सफलता प्राप्ताय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः
88. ॐ ह्रीं सदा प्रसन्नता प्राप्ताय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः
89. ॐ ह्रीं शुभ गुण प्राप्ताय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः
90. ॐ ह्रीं पावन आत्मदर्शनाय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः
91. ॐ ह्रीं संसार द्वंद विनाशनाय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः
92. ॐ ह्रीं निराहार स्वास्थ्य प्राप्ताय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः
93. ॐ ह्रीं अपयश कलंक विनाशनाय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः
95. ॐ ह्रीं कार्य उपद्रव विनाशनाय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः
96. ॐ ह्रीं मनवांछा पूर्ण कराय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः
97. ॐ ह्रीं धर्म औषध प्राप्ताय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः
98. ॐ ह्रीं शुभ निमित्त प्राप्ताय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः
99. ॐ ह्रीं प्रभु पितृ छाया प्राप्ताय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः
100. ॐ ह्रीं ऋद्धि सिद्धी प्राप्ताय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः
101. ॐ ह्रीं महायश प्राप्ताय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः
102. ॐ ह्रीं महा आनंद प्राप्ताय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः
103. ॐ ह्रीं सर्व जीव मैत्री कराय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः
104. ॐ ह्रीं परम गुरु शरण प्राप्ताय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः
105. ॐ ह्रीं महाक्रोध शत्रु नाशनाय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः
106. ॐ ह्रीं विश्व शांति कराय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः
107. ॐ ह्रीं विशिष्ट योग्यता प्राप्ताय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः
108. ॐ ह्रीं जगत सुख तृप्ति कराय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः

जाप्य मंत्र

ॐ ह्रीं श्रीं चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः
सर्व शान्तिं कुरू कुरू स्वाहा।

आरती

तर्ज : भक्ति बेकरार है...

चन्द्र प्रभु दरबार है, अतिशय चमत्कार है।
चन्दा प्रभु के चरणों की, आरती बारंबार है।।
हो... दीप थाल हाथों में लेकर, आया तेरे द्वारे जी-2
संकट हरना झोली भरना, आशा मन में लाया जी-2
चन्द्रप्रभु..........

हो... मात सुलक्षणा सुत कहलाये, खुशियां चारों ओर हुई-2
गुण के सागर भर दो गागर, तन मन अर्पण करता जी-2
चन्द्रप्रभु..........

हो... गिरि सम्मेंद में ललित कूट में, आकर आप विराजे जी-2
मुक्त हुये चरणों का दर्शन, रोम-रोम खिल जावे जी-2
चन्द्रप्रभु..........

हो... सोनागिर के पर्वत ऊपर, समवशरण रचवाया जी-2
नंग अनंग कुमार मुनि ने, मोक्ष यहां से पाया जी-2
चन्द्रप्रभु..........